

तंत्री तथा संपादक :
दीपक देसाई
वर्ष: १, अंक : १२
अखंड क्रमांक : १२
अक्तूबर २००६

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंथर सीटी,
अहमदाबाद-कलोल हाई वे,
पो.ओ.: अडालाज,
जि.: गांधीनगर-३८२४२१
फोन : (०७९)२३९७४१००
e-mail :
dadavani@dadabagwan.org
अहमदाबाद : (०७९)
२७५४०४०८, २७५४३९७९
मुंबई : (०२२) २४१३७६१६
वडोदरा : (०२६५) २६४४४६५
सुरत : (०२६१) २५४४९६४
राजकोट : (०२८१) २४६८८३०
U.S.A. : 785-271-0869
U.K.: 020-8204-0746
Website : www.dadashri.org
www.dadabagwan.org
www.ultimatespirituality.org

Publisher, Owner & Printed by :
Deepak Desai on behalf of
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Printer/Press :
Mahavideh Foundation
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता फी)

१५ साल का
भारत : ८०० रूपया
यु.एस.ए. : १०० डॉलर
यु.के. : ७५ पाउन्ड
वार्षिक
भारत : १०० रूपया
यु.एस.ए. : 10 डॉलर
यु.के. : 7 पाउन्ड
भारत में D.D. / M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के
नाम से भेजे।

दादावाणी

अहंकार छूटने पर सहज !

संपादकीय

ज्ञानी पुरुष सदा सहजात्मस्वरूप दशा में होते हैं। पर सहज आत्मस्वरूप दशा माने क्या? उसकी प्राप्ति कैसे होती है? हरकोई ऐसी दशा प्राप्त कर सकता है? हाँ, अक्रम विज्ञान के द्वारा यह संभव है। इसके लिए खुद का पुरुषार्थ चाहिए। खुद के पुरुषार्थ के द्वारा मनुष्य सहजात्म स्वरूप दशा तक पहुँच सकता है। यहाँ अक्रम विज्ञान में एक घंटे में आत्मज्ञान प्राप्त होता है और 'मैं चंदुभाई हूँ,' यह गलत मान्यता छूट जाती है। सूक्ष्मतम अहंकार, जो कर्म चार्ज करता था, वह खलास हो जाता है। अब शेष में डिस्चार्ज अहंकार है, उसे खलास करने हेतु परम पूज्य दादाजी ने पाँच आज्ञाएँ दी हैं, उसे प्रयोग में लाने पर डिस्चार्ज अहंकार और अपनापा खलास होता जाता है और सहजता के प्रति अग्रसर होता है। ज्ञान प्राप्ति के साथ ही आत्मा सहज होता है, अब मन-वचन-काया यानी प्रकृति को सहज करना है। सहज होने के लिए करना कुछ नहीं है, केवल आत्मविज्ञान समझना है और जो हो रहा है उसमें आज्ञा का समायोजन करना है। इससे बाहरी हिस्सा यानी देह सहज होती जाती है। दोनों सहज हुए कि ज्ञानदशा की पूर्णाहुति हो गई!

मनुष्य के अलावा अन्य प्राणियों का संसार सहज रूप से चलता है, क्योंकि उनका मन लिमिटेड है, बुद्धि, अहंकार नहीं के बराबर है। मनुष्यों की बुद्धि और अहंकार का विस्तार अपार है। अहंकार और बुद्धि उन्हें सहज रहने नहीं देते हैं। उनसे कर्तापन, ममत्व और मैंपन होने से चिंता-जंजाल और भुगतान रहते हैं। अरे! नौद जो अपने आप आती है, उसका भी अहंकार करे कि 'मैं तुरंत ही निद्राधीन हो गया', जाग जाये उसमें भी खुद अहंकार करे कि 'आज मैं जरा देर से जागा।' 'मेरा अच्छा दिखेगा', 'मेरा खराब दिखेगा', 'लोग क्या सोचेंगे मेरे बारे में', 'मैं यह कर सकता हूँ या नहीं', 'मुझसे यह होगा', 'मुझसे यह नहीं होता', 'मुझे यह करना है', 'मैं यह नहीं करनेवाला', इस प्रकार अहंकार प्रकृति की हर क्रिया का कर्ता होकर दखल करता है और साहजिक रहने नहीं देता। जो डिस्चार्ज सहज है, उसका कर्ता होने पर असहज होते जायें और डिस्चार्ज में अकर्ता होने पर, ऐसी जागृति यह ज्ञान के द्वारा समायोजित करने पर सहज होते जायें।

परम पूज्य दादाश्री ज्ञानदशा के शिखर पर विराजकर सहज रह पाये। उनसे विपरीत स्थिति में यानी अज्ञान दशा में बालक या तो जानवर सहज रहा करते हैं। जैसा उदय आया उसके अनुसार, उस समय, उनसे ऐसा हो जाता है।

ज्ञान प्राप्ति के बाद पूर्णता की प्राप्ति हेतु, सहज होने का ध्येय लक्ष्य में रखकर, बुद्धि और अहंकार की यथार्थ पहचान करके, पाँच आज्ञा का पालन करते हुए अहंकार का जैसे जैसे क्षय करते जायेंगे, वैसे-वैसे सहज दशा प्राप्त होती जायेगी। प्रस्तुत संकलन में परम पूज्य दादाश्री अपनी सहज वाणी में सहजता की ओर ले जानेवाले आंतरिक पुरुषार्थ का रहस्य समझाते हैं, जो पाठकों को इस दिशा में अग्रसर होने में सहायक सिद्ध होगा।

दीपक देसाई ...

अहंकार छूटने पर सहज !

‘मैं’ का स्थान बदलाव !

यह ‘मैं चंदुलाल हूँ’ वह अहंकार है। क्योंकि जहाँ ‘मैं’ नहीं है, वहाँ ‘मैं’ का आरोपण किया, इसका नाम अहंकार।

प्रश्नकर्ता : ‘मैं चंदुलाल हूँ’ कहा, उसमें अहंकार कहाँ आया? ‘मैं यह हूँ, मैं वह हूँ’ ऐसा कहे वह अलग बात है पर सहज रूप से अपना नाम बताया, उसमें अहंकार कहाँ आया?

दादाश्री : सहज भाव से बोलने पर भी अहंकार थोड़े ही चला जाता है? ‘मेरा नाम चंदुलाल है’ ऐसा सहज भाव से कहने पर भी वह अहंकार ही है, क्योंकि आप जो हैं उसकी आपको पहचान नहीं है और जो आप नहीं है उसका आरोपण करते हैं, वह सारा अहंकार ही है न?

आप चंदुलाल है, यह ड्रामेटिक वस्तु है। इसलिये ‘मैं चंदुलाल हूँ’ ऐसा बोलने में हर्ज नहीं है पर ‘मैं चंदुलाल हूँ’, यह बिलिफ (मान्यता) नहीं होनी चाहिए।

प्रश्नकर्ता : हाँ जी, वर्ना ‘मैं’ पद आ गया।

दादाश्री : ‘मैं’, ‘मैं’ के स्थान पर बैठे तो अहंकार नहीं है। ‘मैं’ मूल स्थान पर नहीं है, आरोपित स्थान पर है इसलिये अहंकार है। आरोपित स्थान पर से उठकर मूल स्थान पर आ जाये मतलब अहंकार गया। ‘मैं’ हटाना नहीं है, ‘मैं’ को अपने यथार्थ स्थान पर विराजित करना है।

करना नहीं, समझना है !

प्रश्नकर्ता : आप जो बोलते हैं वह सुनता हूँ और उसे पचाने की कोशिश करता हूँ।

दादाश्री : पचाने की कोशिश मत करना। यह पचाने योग्य वस्तु ही नहीं है। इसे पचाने की कोशिश करेंगे न, वह सब अहंकार से कोशिश होगी, यानी

अहंकार उलटे बड़ेगा।

प्रश्नकर्ता : तब क्या करना?

दादाश्री : सहज होना है, सहज।

प्रश्नकर्ता : कोशिश तो करनी ही पड़ेगी न?

दादाश्री : नहीं, नहीं, कोशिश करने से तो अहंकार बड़ेगा, सहज होना है। करना कुछ नहीं है, जानना है, समझना है। केवल समझना है। करने को तो संडास जाने की शक्ति हमारे हाथों में है क्या? संडास बंद हो जायें तब पता नहीं चलेगा? उसके अटकने पर कोई दवाई लेनी पड़े या तो डॉक्टर को बुलाना पड़े, यह सब नहीं करना पड़ता क्या?

प्रश्नकर्ता : करना पड़े।

दादाश्री : और जब डॉक्टर को अटक जाये तब? विदेश में मैं ने विदेशी डॉक्टरों को इकट्ठा किया और उनसे यही सवाल किया, तो सब उछलने लगे। मैं ने कहा, ‘उछल-कूद’ मत करना। आपको अटकेगा न, तब मालूम पड़ जायेगा। इस पर सब कहने लगे, ‘यस, यस, यस।’ तब मैं ने पूछा, ‘जब आपकी संडास जाने की शक्ति नहीं है, तो दूसरी कौन-सी शक्ति है, जिसके बूते बिना वजह यों ही शोरगूल मचाते हो? यह सब चलानेवाली एक और शक्ति है, जो सब चलाया करती है और जो लोग नैमित्तिक रूप से किया करते हैं, वे मन में ऐसा मानते हैं कि ‘यह मैं ही करता हूँ’। जैसे बैलगाड़ी के नीचे चलनेवाला कुत्ता मानता है कि अहह! यह बैलगाड़ी मैं ही खींच रहा हूँ !

सहजता यही अप्रयत्न दशा !

प्रश्नकर्ता : वह जो चरणविधि में है न कि, ‘मन-वचन-काया की आपके जैसी सहजता मुझे प्राप्त हो’, तो वह कैसी सहजता है? यानी सहजता की परिभाषा क्या?

दादावाणी

दादाश्री : सहजता यानी गहराई में न जायें तो अप्रयास दशा, कोई भी प्रयास नहीं। आत्मा को लेकर प्रयास नहीं और देह के जरिये भी कोई प्रयास नहीं, बुद्धि का भी प्रयास नहीं।

प्रश्नकर्ता : वहाँ फिर मन-वचन-काया का सुमेल तो होता है न?

दादाश्री : अनायास दशा हुई, बस। प्रयास नहीं, उसमें प्रयास करनेवाला ही निकल जाये। मन-वचन-काया कार्य करनेवाले हैं, पर प्रयास करनेवाला निकल जाये। प्रयास करनेवाले की अनुपस्थिति वह है तो सहज दशा और प्रयास करनेवाले की उपस्थिति वह असहज (दशा) यानी प्रयास करनेवाले के जाने से सहज। फिर जो क्रिया होती हो उस क्रिया का एतराज नहीं, प्रयास करनेवाले का एतराज है।

प्रश्नकर्ता : यानी यह प्रयास करने की ऐसी गाँठ पड़ी है उसे?

दादाश्री : हाँ।

प्रश्नकर्ता : यानी किसी भी प्रक्रिया में प्रयास की वास्तव में आवश्यकता ही नहीं क्या?

दादाश्री : प्रयास जरूरी है, मगर उसका करनेवाला नहीं होना चाहिए। प्रयास की आवश्यकता नहीं है ऐसा कहने पर तो फिर लोग काम करना ही छोड़ दें सब। छोड़ देने की भावना करें। यानी प्रयास जरूरी है।

प्रश्नकर्ता : मगर अंदरूनी हक्रीकत क्या है, एक्झेक्टनेस?

दादाश्री : वह प्रयास करनेवाला ही जाता रहे, मतलब बस हो गया।

प्रश्नकर्ता : यह जब मन-वचन-काया की प्रक्रिया होती है, उस समय प्रयास करनेवाला सचमूच होता है सही?

दादाश्री : प्रयास करनेवाला है इसलिये ही

यह प्रयास कहलाता है। वह सहज नहीं कहलाता। प्रयास करनेवाला नहीं रहा यानी वही की वही वस्तु फिर सहज कहलाये।

प्रश्नकर्ता : तो यह मन-वचन-काया की प्रक्रिया जो प्रयास करनेवाला करता है, तब जो ही जाती है और प्रयास करनेवाला नहीं रहता, तब जो होती है, वास्तव में तो वे दोनों मिकेनिकल वस्तु ही थी न?

दादाश्री : वस्तु होने में एक ही है, होने में चेन्ज नहीं है।

प्रश्नकर्ता : यानी इसने यदि प्रयास नहीं किया होता तो भी वही होता?

दादाश्री : प्रयास में दखल है, झमेला है।

प्रश्नकर्ता : दखल का फल भुगतना खुद को आता है कि दखल से मन-वचन-काया में परिवर्तन होता है?

दादाश्री : कोई परिवर्तन नहीं होता।

प्रश्नकर्ता : तो फिर प्रयास करने पर क्या परिणाम आता है?

दादाश्री : वह तो केवल उसका अहंकार है, 'मैं करता हूँ।'

प्रश्नकर्ता : उससे अगले भव की जवाब देही खड़ी होती है?

दादाश्री : हाँ, अगले भव की जवाब देही लेता है, क्योंकि वह रोंग बिलिफ है।

प्रश्नकर्ता : और यदि यह रोंग बिलिफ छूट जाये तो प्रयास करनेवाला नहीं रहा कहलायें?

दादाश्री : फिर अप्रयास दशा, सहज हो गया। हम खायें-पीयें वह सब सहज कहलायें।

प्रश्नकर्ता : यानी रोंग बिलिफ थी तब प्रयास करनेवाला कहलाया, उस रोंग बिलिफ के जाने के

दादावाणी

बाद क्या होता है?

दादाश्री : कुछ भी नहीं होता, दखलअंदाज जाता रहता है।

प्रश्नकर्ता : मगर जिसे रोंग बिलिफ थी, उसका अस्तित्व रहता है फिर?

दादाश्री : एक ओर आत्मा और एक ओर यह देह, अप्रयास देह, मन-वचन-काया। फिर वह पुद्गल तो है ही पर उनके बीचवाला, इगोइज़मवाला हिस्सा उड़ गया।

जिसे स्ट्रेइन पड़ता था वह चला गया, थकनेवाला चला गया, जो ऊब जाता था वह चला गया, वह सब चला गया।

प्रश्नकर्ता : तो रहा कौन?

दादाश्री : कुछ भी नहीं, सहज रहा। अन्य किसी का दखल नहीं रहा अंदर।

प्रश्नकर्ता : इस देह से होनेवाली क्रिया हो, मानों वाणी है, तो उसमें उस अहंकार की ज़रूरत तो पड़ती है न?

दादाश्री : कोई ज़रूरत नहीं। कॉझिज़ करनेवाला ही चला गया, वहाँ फिर इफेक्ट ही शेष रही।

प्रश्नकर्ता : तो फिर आप जो कहते हैं कि जब तक अहंकार के हस्ताक्षर नहीं होते वहाँ तक क्रिया में नहीं आता, तो फिर वह अहंकार कौन-सा?

दादाश्री : डिस्चार्ज अहंकार।

प्रश्नकर्ता : तो इस डिस्चार्ज अहंकार की क्रिया में, उसके परिणाम में क्या अंतर होता है?

दादाश्री : सहज, प्रयास करनेवाला नहीं होता, सहज होता है।

प्रश्नकर्ता : हाँ जी, मगर वह सहज होता है उसमें वह प्रयास करनेवाला अहंकार नहीं होता, मगर

डिस्चार्ज अहंकार तो होता है न उसमें?

दादाश्री : उसमें एतराज नहीं है, वह तो होता ही है न? वह तो सब मुरदार। उसी का नाम ही सहज क्रिया।

छेडने पर फन फैलाये अहंकार !

प्रश्नकर्ता : उदाहरण के तौर पर मान लिजिये कि इन्कमटैक्स में मेरा एक फाइल पैन्डिंग है। इन्कमटैक्स के ऑफिसर को यह ज्ञान नहीं है, इसलिये उसका अहंकार बना हुआ है। अब वह अहंकार को लेकर मेरा कुछ बिगाड़ सकता है क्या?

दादाश्री : नहीं, यदि आप अहंकार से उसके प्रश्न का जवाब नहीं देते हैं, तो आपका कुछ नहीं बिगड़ेगा।

प्रश्नकर्ता : मैं उसके पास जाता भी नहीं, मुझे उसके पास जाने की ज़रूरत नहीं है, पर यह फाईल का काम उसके रूटिन में आता है।

दादाश्री : उसमें हर्ज नहीं है।

प्रश्नकर्ता : पर यदि वह ऑफिसर अहंकारी रहा, तो क्या मेरा कुछ नुकसान कर सकता है ?

दादाश्री : उसकी संडास जाने की शक्ति तक नहीं है तो आपका क्या कर लेगा? आपके खिलाफ कब करेगा कि जब आप ऐसा कहे कि ऐसे ऑफिसर को तो मैं देख लूँगा।

प्रश्नकर्ता : ऐसा तो कोई थोड़े ही करता है कभी ?

दादाश्री : हाँ, आप सहज है, विनम्र है, तो आपको कुछ नहीं होनेवाला। आप यदि कुछ इधर-उधर नहीं करते हैं, तो व्यवस्थित में कोई परिवर्तन नहीं होनेवाला। उस बेचारे की शक्ति ही नहीं है।

प्रश्नकर्ता : अब एक ओर से आप कहते हैं कि उसकी संडास जाने की शक्ति नहीं है और दूसरी ओर से कहते हैं कि उसको अहंकार है, ऐसा क्यों?

दादावाणी

दादाश्री : यदि हम कुछ उलटा-सीधा करेंगे, तो उसके पास भी वैसी शक्ति है ही। यानी हमें किसी शब्द को उछालना नहीं चाहिए।

अहंकार से चिंता, चिंता से...

संसार में जो बाय प्रोडक्ट का अहंकार होता है, वह सहज अहंकार है। उससे साहजिक रूप से चलता रहे ऐसा है, वहाँ लोगों ने अहंकार का पूरा कारखाना ही खोल रखा है। फिर उसका बड़ा विस्तार किया, इतना विस्तार किया कि चिंताओं का कोई अंत नहीं रहा। अहंकार का विस्तार करते ही रहे। वर्ना सहज अहंकार से यह संसार चल सकता है, नॉर्मल अहंकार से, ज़रूरत ही नहीं वहाँ पर अहंकार विस्तार ने की। बोलो, ये चाचाजी इस उम्र में कहते हैं कि मुझे चिंता होती है। ऐसी चिंता होने का क्या फल है? आगे जानवर गति आयेगी, इसलिये संभल जाइये, अभी संभल जाने जैसा है। मनुष्य में हो वहाँ तक संभल जाओ, चिंता होगी वहाँ जानवर का फल आयेगा।

ज्ञानी की शरण में संसार विस्मृत !

आप संसार भूला पाते हैं क्या? आप सभी आपके संसार की सारी सीमाएँ भूला पाते हैं क्या? स्मरण रहा ही करे न? सहज ही रहा करे और मुझे संसार का स्मरण क्षणभर के लिए भी नहीं होता। मुझे आज कौन-सा वार है, यह भी मालूम नहीं होता। दिनांक, वार का भी पता नहीं होता। इसका क्या नाम है, इसकी खबर भी मुझे नहीं होती। क्योंकि इससे कोई लेना-देना ही नहीं है न! इसके साथ कोई संबंध ही नहीं रहा, जब तक संबंध रहा तब तक आप संसार भूलना चाहें तब भी नहीं भूला पायेंगे। जितना समय यहाँ मेरे पास बैठेंगे, उतना समय भूला पायेंगे पर जैसे ही बाहर निकले कि लिपटेगा। बाहर निकलने पर लिपटेगा कि नहीं लिपटेगा? माया तुरंत लिपटेगी एक-एक करके !

प्रश्नकर्ता : इसलिये तो अकुलाहट होती रहती है।

दादाश्री : अकुलाहट भी ऐसी होगी कि बर्दाश्त नहीं कर पाते। नींद कैसे आयेगी? करवटें बदलते रहें सारी रात, तब भी नींद पास नहीं आती। नींद आना हमारे हाथों में नहीं है और जागना भी हमारे हाथों में नहीं है और फिर अहंकार क्या कहेगा? 'मैं तो साढ़े दस बजे सो गया था और सबेरे पाँच बजे जाग गया।' अरे मुए, नींद आना तेरे बस में नहीं है और बिना वजह क्यों बड़बड़ाता है? पागलों के अस्पताल में है कि क्या है? इगोइज़म ही करता है खाली।

अक्रम ज्ञान से रहा शेष डिस्चार्ज कर्म !

प्रश्नकर्ता : सारे मामलों में अन्य कोई करवा रहा है ऐसा तो नहीं, हम भी थोड़ा कुछ करते तो हैं न?

दादाश्री : हाँ, करते हैं यह बात सही है मगर जो करते हैं वह अगले अवतार का करते हैं और इस अवतार का सारा करवाया जा रहा है, डिस्चार्ज सारा करवाया जा रहा है। केवल चार्ज हम करते हैं (अगले अवतार के लिए)।

यहाँ ज्ञान लेने के बाद हम कहते हैं न कि आपके नये कर्म चार्ज होना बंद हो गया। आपके किये कर्मों को इस अवतार में भुगतना है। अब आप नया चार्ज नहीं करते हैं, इसलिये यह भुगतान पूरा करके आप अपने गाँव यानी मोक्ष में चले जाइये।

प्रश्नकर्ता : बिना कर्तापद के कार्य कैसे संभव है ?

दादाश्री : ऐसा है न, (यह ज्ञान पाने के बाद) यदि 'मैं कर्ता हूँ' का भान नहीं होता तो उसके कार्य तो निरंतर डिस्चार्ज रूप से हुआ करते हैं, पर अंदर 'मैं कर्ता हूँ' ऐसा भान रहने पर उसे फिर से नया कर्म चार्ज होता है। मतलब कर्तापद का भान होने पर फिर से नया कर्म बंधता है और अकर्ता पद का भान होने पर कर्म नहीं बंधता, इतना ही अंतर है।

अहंकार बंद करना आसान !

कर दिया।

प्रश्नकर्ता : मगर उस कर्तापन के साथ अहम् भाव जुड़ा हुआ है ?

दादाश्री : हाँ, तो ?

प्रश्नकर्ता : ये तो ठहरे संसारी जीव, इनको कर्तापन का या जो कुछ अहम् होता है, उसे मिटाना कोई आसान बात तो नहीं है न ?

दादाश्री : नहीं, सब से आसान बात ही वही है। सहज से सहज वस्तु वही है, अहंकार को बंद करना। क्रोध-मान-माया-लोभ बंद करना वह सब से सहज वस्तु है। बाकी, कष्ट करने पर क्रोध-मान-माया-लोभ कभी जानेवाले नहीं है। चाहे कितने भी कष्ट उठाये, चाहे कितने भी कष्ट किये जाये, फिर भी अहंकार हटनेवाला नहीं।

बखेड़ा नहीं वह सहज !

आत्मा तो सहज ही है, स्वभाव से ही सहज है। देह को सहज करनी है। यानी उसके परिणाम में बखेड़ा नहीं करना। उसका जो इफेक्ट हो, उसमें किसी भी प्रकार का बखेड़ा नहीं करना, उसका नाम सहज कहलाये। परिणाम अनुसार ही होता रहे। बखेड़ा करना यह भ्रॉति है। बखेड़ा करनेवाला मनुष्य अपने मन में ऐसा समझता है कि 'मैं कुछ करता हूँ।' 'मैं कुछ करता हूँ' यह भ्रॉति है।

व्यवहार में जब तक पूर्ण रूप से तैयार नहीं हुआ, वहाँ तक संपूर्ण आत्मा प्राप्त नहीं हुआ है। यानी व्यवहार में सहजात्म स्वरूप, मतलब किसी का किसी से आमने-सामने कोई दखल नहीं। ऐसा हो कि ऐसा नहीं हो, कोई दखल नहीं। किसी का किसी के अंदर दखल ही नहीं। अपना-अपना कार्य किया करें। 'कर्ता' जो करे, 'ज्ञाता' उसे निरंतर जाना करे। दोनों अपने-अपने कार्यों में लगे रहें।

देखिये, यह कैसा अजूबा! दस लाख सालों में यह सब से बड़ा अजूबा है। अनेक लोगों का कल्याण

'यह मुझसे हो सकता है और यह मुझसे नहीं हो सकता, इसका मुझे त्याग करना है' ऐसा रहता है वहाँ तक सब अधूरा है। त्याग करनेवाला अहंकारी, यह हमसे नहीं होगा ऐसा कहनेवाला अहंकारी, यह हमसे हो सके कहनेवाला अहंकारी, यह सब अहंकार ही अहंकार है। यानी आपका यह (स्वरूप) पूर्ण रूप से प्रकट हुआ है, इसलिये सभी क्रियाएँ हो सकती हैं। संसार की सर्वस्व क्रिया हो सके और आत्मा की सर्वस्व क्रिया होती रहे, दोनों अपनी-अपनी क्रिया में रहे और वह भी संपूर्ण वीतरागता में रहकर, ऐसा यह अक्रम विज्ञान है।

व्यवहार आत्मा सहज तो देह सहज !

आत्मा की सहजता करनी नहीं है, आत्मा तो खुद सहज ही है, बाहर सहजता हो गई तो खुद सहज ही है। बाहरी सहज नहीं होता है न!

प्रश्नकर्ता : यह ठीक से समझ में नहीं आया।

दादाश्री : आत्मा सहज होने पर देह तो अपने आप सहज हो जायें, मतलब क्या है इसका? यह व्यवहार आत्मा सहज होने पर देह सहज ही हो जाती है, पर मूल आत्मा तो सहज है। यह सारा झंझट ही व्यवहार आत्मा का है।

प्रश्नकर्ता : आपने कहा न कि सहज भाव से थप्पड मारना, यानी सहज भाव का थप्पड हो सकता है क्या?

दादाश्री : हाँ, हो सकता है थप्पड भी।

प्रश्नकर्ता : दादाजी जो प्रसाद देते हैं, बूट से मारकर...

दादाश्री : वह सब सहज भाव से होता है। सहज भाव यानी 'मैं मारता हूँ' इसकी सभानता नहीं होती, 'मैं मारता हूँ' यह ज्ञान में नहीं होता, 'मैं मारता हूँ' ऐसा श्रद्धा में नहीं होता, उसका नाम सहज भाव।

दादावाणी

और सहज भाव से हम मारे, इसलिये किसी को दुःख नहीं होता।

प्रश्नकर्ता : ज्ञानी के अलावा और कोई सहज भाव से थप्पड़ मार सके क्या?

दादाश्री : हाँ, जिसे सहज भाव हो, वह मार सके।

प्रश्नकर्ता : ज्ञानी के अलावा और कोई यदि थप्पड़ मारे तो सामनेवाले को दुःख हुए बगैर नहीं रहता।

दादाश्री : यदि दुःख हुआ तो वहाँ सहजता नहीं है। कुछ बिगाड़ है उसमें, वर्ना दुःख नहीं होना चाहिए।

हमारा सब सहज होता है। यानी सहजता की ओर जाना है। यह मार्ग सहजता का है। नो लॉ लॉ, सहजता की ओर ले जानेवाला है। यदि लॉ (कायदा) रहा तो सहजता कैसे होगी? इस समय मैं यहाँ बैठा हूँ, वैसे कोई बैठता नहीं। ऐसा कुछ आया हो तो छूए तक नहीं। ऐसा सारा आचरण वह साहजिकता नहीं है। साहजिक माने जैसे अनुकूल आये वैसे रहना। दूसरा कोई विचार ही नहीं आता कि लोग मेरे बारे में क्या कहेंगे या ऐसा-वैसा, कुछ नहीं होता। यानी यह साहजिकता आदि सब निरीक्षण करेंगे तो मालूम पड़ जायेगा कि यह भाईजी ऐसे हैं।

प्रश्नकर्ता : अहंकार भी साहजिक होता है कि नहीं ?

दादाश्री : हम उसे पहचान लेंगे। क्योंकि अहंकार मूलतः अंधा है न! यानी जहाँ कहीं जाये पर अंधा होने के कारण मालूम पड़ जाये, क्योंकि बिना टकराये रहनेवाला नहीं।

प्रश्नकर्ता : हाँ जी, यानी वहाँ फिर साहजिक नहीं न?

दादाश्री : नहीं, अहंकार होगा वहाँ साहजिक

हो ही नहीं सकता न!

एकता मानी अहंकार ने !

प्रश्नकर्ता : यानी ऐसा हुआ कि जो असहज है वह सहज को बाँध लेता है ?

दादाश्री : जहाँ तक एकता मानी है, वहाँ तक।

प्रश्नकर्ता : एकता किसने मानी है ?

दादाश्री : अहंकार ने एकता मानी है।

प्रश्नकर्ता : जहाँ तक भेदज्ञान नहीं हुआ, वहाँ तक यह समझ में कैसे बैठेगा ?

दादाश्री : समझ में बैठता ही नहीं न! जहाँ तक अहंकार है, वहाँ तक 'इट हेपन्स' कैसे कहलाये? अहंकार है वहाँ तक कब कौन-सा पागलपन दिखाये इसके बारे में क्या कह सकते हैं? और आपका अमुक हिस्से का अहंकार 'ज्ञान' लेने के कारण चला जाता है। जो चार्ज अहंकार है, जो दखल देनेवाला अहंकार है वह चला जाता है और 'इट हेपन्स'वाला (डिस्चार्ज) अहंकार शेष रहता है। इसलिये समझ में बैठता है।

प्रश्नकर्ता : डिस्चार्ज करने, निपटारा करने हेतु अहंकार रहता है ?

दादाश्री : 'इट हेपन्स' में चाहिए ऐसा डिस्चार्ज अहंकार रहता है।

वेग, आवेग और उद्वेग !

प्रश्नकर्ता : वेग, आवेग और उद्वेग समझाइये।

दादाश्री : वेग साहजिक है और आवेग असहज है। खुद कर्ता होने पर आवेग होता है और उद्वेग तो खुद को नहीं करना हो फिर भी हो जाता है। खुद की इच्छा नहीं रही तब भी उद्वेग होता है, वह उद्वेग भी कैसा? सिर फोड़ डाले ऐसा उद्वेग होता है। सिर फटफट रहा होता है। वेग तो ज्ञानियों को भी होता है, आवेग नहीं होता और उद्वेग तो होता ही नहीं।

कर्ताभाव से क्रिया !

प्रश्नकर्ता : खायें-पीयें नहीं तो ऐसा करना क्रिया कहलाये? वह क्या कहलाये?

दादाश्री : नहीं, वह क्रिया नहीं कहलाये। 'मैं करता हूँ' ऐसा कहने पर क्रिया कहलाती है। साहजिक रूप से जो होता है उसका कुछ नहीं। 'मैं करता हूँ, बिना नहाये मुझे नहीं चलता' वह सब क्रिया कहलाये। खुद कर्ता हुआ कहलाये।

इफेक्ट का कर्ता, वहाँ काँझ !

'इफेक्ट' तो अपने आप होता रहता है मगर खुद अंदर 'काँझिझ' करता है। 'मैं ने किया, मैं बोला' करके अंदरूनी रूप से आधार देता है। वास्तव में 'इफेक्ट' में किसी को कुछ करने की जरूरत ही नहीं है। 'इफेक्ट' अपने आप सहज भाव से होता ही रहता है, मगर हम उसे आधार देते हैं कि 'मैं करता हूँ' जो भ्रॉति है और वही 'काँझिझ' है।

प्रश्नकर्ता : उस 'काँझ' का 'काँझ' (कारण) क्या है ?

दादाश्री : अज्ञानता। 'रूट काँझ' (मूल कारण) अज्ञानता है। 'ज्ञानी पुरुष' अज्ञानता दूर करते हैं।

आज्ञापालन से होवे सहज !

प्रश्नकर्ता : मन-वचन-काया की सहजता और आत्मा की सहजता इसके बारे में ज़रा समझाइये।

दादाश्री : आत्मा सहज है ही। ज्ञान प्रदान के पश्चात् जो शुद्धात्मा लक्ष्य में आता है न, वह अपने आप ही लक्ष्य में आता है। हमें याद करना नहीं पड़ता। जिसे याद करें उस वस्तु को भूल जाते हैं। इसका लक्ष्य निरंतर रहता है। उसे सहज आत्मा हुआ कहलाये। अब मन-वचन-काया सहज करने के लिए एक ज्ञानी पुरुष की ही आज्ञा का पालन ज्यों ज्यों करते जायें, त्यों त्यों मन-वचन-काया सहज होते जायें।

प्रश्नकर्ता : आज्ञा में आप सहज भाव से

निपटारा करने को कहते हैं, ऐसा सहज भाव करने का तरीका क्या है ?

दादाश्री : सहज भाव माने क्या? यह ज्ञान पाने के बाद आप शुद्धात्मा हुए, मतलब आप सहज भाव में ही है, क्योंकि जब अहंकार हाज़िर नहीं होता तब सहज भाव ही होता है। अहंकार एबसन्ट माने सहज भाव।

यह आत्मज्ञान पाया यानी आपका अहंकार एबसन्ट है। आप जो 'मैं चंदुभाई हूँ' मानते थे ऐसा अब नहीं मानते हैं न?

'मैं ने वकालत की और मैं ने छुडवाया, मैं ने ऐसा किया, और मैं संडास जाकर आया' कहें। अहह! फिर कल क्यों नहीं गये थे? तब कहें, 'कल तो डॉक्टर बुलवाना पड़ा था, अंदर अटक गया था।'

अहंकार को लेकर सक्रियता है। अहंकार के कारण सब बिगड़ गया है। वह अहंकार दूर हो जाये यानी सब रेग्युलर हो जाये, फिर साहजिक हो जाये। अहंकार सब बिगाड़ता है, खुद का ही बिगाड़ता है और साहजिकता होने पर सब सुंदर होता है।

यहाँ जग विस्मृत और सत् की स्मृति !

संसार भूलना चाहें तो उसकी ही स्मृति रहा करती है। विस्मृत होने पर तुरंत स्मृति साथ लगी ही रहती है, मतलब कि संसार विस्मृत हो सके ऐसा नहीं है। घंटे भर के लिए यदि विस्मृत करना चाहें तो अधिकाधिक स्मृति में आता रहता है। जिसे भूलना चाहें वह अधिक याद आता रहता है। ज्ञानी पुरुष खुद संसार को भूल चूके हैं, इसलिये उनके पास बैठने से सत्संग के कारण हम भी संसार भूल जाते हैं। जो संसार भूला बैठे हैं, उनके साथ बैठने पर भूला पायेंगे। क्योंकि उनको परपरिणति होती ही नहीं है। ज्ञानी पुरुष को परपरिणति ही नहीं होती है। सारी बातचीत करेंगे, संसार का सारा व्यवहार करेंगे पर उनका व्यवहार आदर्श होता है।

दादावाणी

व्यवहार आदर्श होता है और इस व्यवहार में खुद नहीं होते। व्यवहार, व्यवहार के तौर पर चलता रहे। खुद की गैरहाजिरी में व्यवहार चलता रहे और व्यवहार वास्तव में ऐसा ही है कि अपने आप चला करे पर भ्राँति से एकता होती है। यह भ्राँति किस आधार पर खड़ी है? जागृति नहीं है इसलिये। जागृति की मंदता के कारण भ्राँति खड़ी रही है। इसलिये फिर चूक जाये। फिर जागृति उत्पन्न होगी पर यह व्यवहार जागृति है, निश्चय जागृति नहीं है। व्यवहार जागृति में तो सारा व्यवहार याद आता ही रहे, उलटे अधिक से अधिक याद आता रहे और व्यवहार में लोगों को जितनी जागृति रहे उतनी ठोकर लगे। व्यवहार में जागृति रहने पर ठोकर लगे। व्यवहार में सहज भाव में रहे तो ठोकर नहीं लगती। व्यवहार में अजागृति काम की नहीं और जागृति भी काम की नहीं, व्यवहार में सहज भाव से रहना चाहिए। ज्ञानी पुरुष सहज भाव में होते हैं। कब क्या बोलना, क्या सोचना यह उनका पूर्व आयोजित नहीं होता। सहज भाव से निकला करे, यानी यह वाणी सारी की सारी टेपरिकार्ड बोल रहा हो, उसके समान है, खुद नहीं बोलते।

अहंकार का दखल नहीं वह सहज !

देह सहज माने स्वाभाविक, उसमें हमारा दखल नहीं होता। अहंकार का दखल नहीं हो, उसे सहज देह कहलाये। यह हमारी देह सहज हुई कहलाये यानी आत्मा सहज ही होता है। अहंकार का दखल आपकी समझ में आया? अहंकार गया तो मानों सब गया। अहंकार को लेकर यह सारा संसार है। सब अहंकार के आधार पर ही है, और कुछ बाधा नहीं करता। 'मैं', 'मे', यह इगोइज़्म बाधक है।

अहंकार रहा वहाँ तक असहजता !

प्रश्नकर्ता : जिसको दुःख ही नहीं होता, जो दुःख नहीं भोगता हो, उसका मोक्ष नहीं है क्या?

दादाश्री : नहीं, उसको तो मोक्ष ही है न! मगर ऐसा संभव नहीं। ऐसा किसके लिए संभव है? ज्ञानी

के अलावा किसी को संभव नहीं है। क्योंकि ज्ञानी होम डिपार्टमेन्ट (अपने स्वस्वरूप) में ही रहते हैं, इसलिये दुःख का अनुभव नहीं होता, मोक्ष स्वरूप होते हैं। वे फॉरीन (अनात्म विभाग) में प्रवेश ही नहीं करते। फॉरीन के साथ व्यवहार ही नहीं होता। सचर व्यवहार बंद हो गया होता है, और जो शेष सचर है, वह सचर व्यवहार सहज रूप से चलता रहता है। उनकी सारी अवस्थाएँ साहजिक होती है। खाना-पीना, उठना-बैठना सब सहज होता है, जिसमें अहंकार की ज़रूरत नहीं रहती, ऐसा सहज होता है।

प्रश्नकर्ता : तो दादाजी, अहंकार असहज है?

दादाश्री : अहंकार से ही, वह अहंकार को लेकर असहज है। यदि अहंकार रहित हुआ तो शुद्धात्मा के साथ एक ही हो जाये। ऐसा होते ही, थोड़ी देर भी नहीं ठहरता, अहंकार रहित होते ही (शुद्धात्मा के साथ) एक हो जाये।

कर्ताभाव से भव बंधन !

प्रश्नकर्ता : जहाँ मेरे बिना कुछ नहीं चलता ऐसा लगे, उसे आप सजीव अहंकार कहते हैं क्या?

दादाश्री : हर एक क्रिया करते समय 'मैं करता हूँ' ऐसी सभानता है न, वही सजीव अहंकार है। इस नाई को तय करना पड़े कि मुझे इसकी हजामत करनी है, तब वह हो ही जायेगी। और यदि 'मैं करता हूँ, मेरे बगैर कोई नहीं कर सकता' कहेगा तो उलटे लहू निकालेगा।

मतलब सहज होने पर सौ फीसदी फल मिलता है और यदि उलटा करने गये तो चालीस फीसदी फल मिलेगा। यानी सहजता का फल ऊँचा होता है। अहंकार अंधा है, वह कार्य पूर्णतया सफल होने नहीं देता और ऊपर से अगला भव बाँधता है, सो अलग!

ज्ञान से अहंकार जाये सहज में !

सहजता से अहंकार बिलकुल जाये, उसका उपाय ही सहज है। मगर खुद सहज नहीं कर सकता

दादावाणी

न, खुद विकल्पी है, इसलिये निर्विकल्प कैसे हो सके? वह तो जिसे अकर्ता पद की प्राप्ति हुई हो, जो मुक्त पुरुष हो, उनके पास जाने से वे हमें सहज रूप से ही काम कर देंगे।

यानी अहंकार सहज निकल जाये ऐसी वस्तु है, क्योंकि वह सहज रूप से ही उदित हुआ है। उसके लिए कोई कष्ट उठाना नहीं पड़ा है और अस्त भी सहज रूप से ही होता है। यह जितने कष्ट उठाये न, उतना अहंकार बढ़ता जाता है उलटे।

परिणाम में कर्ता कौन?

पूर्व में किये कर्मों के आधार पर इस अवतार में कार्य होता है (फल मिलता है)। लोग क्या समझें कि, 'यह इसने आज किया।' इस अवतार में जो करते हैं न, वह पूर्वकर्म के दबाव में आकर करना पड़ता है। हमारी खुद की संमति से नहीं। मगर लोग समझते हैं कि यह (करनेवाले ने) इस समय अपनी मरजी से किया है। यानी ही इज़ नोट रिस्पॉन्सिबल टुडे (वह आज जिम्मेवार नहीं है)। पिछले अवतार की जिम्मेवारी है। आज उसने नहीं किया तो करनेवाला कौन है? यह 'परिणाम' ने किया है। उसके किये का परिणाम आया और उस परिणाम के फल स्वरूप यह हुआ, जो भी हुआ सो।

देहाध्यास छूटे वहाँ सहजता !

प्रश्नकर्ता : अब जो आत्मा के भान में आया उसका जो व्यवहार है, वह सहज व्यवहार होता है सारा?

दादाश्री : खुद के भान में आया यानी फिर व्यवहार के साथ कुछ लेनादेना ही नहीं रहा। व्यवहार चलता रहे।

प्रश्नकर्ता : यानी उदयाधीन व्यवहार होता है उसका ?

दादाश्री : बस, और कुछ होता ही नहीं न! कर्तापन छूटने के बाद ही वह आत्मा के भान में आता

है। यदि कर्तापन छूट गया तो शेष उदय स्वरूप रहा। यह (देह) अपने आप चलती रहे और यह भी (आत्मा) अपने आप, दोनों अपनी-अपनी रीति अनुसार चला करते हैं।

देहाध्यास चला जाने से, आत्मा अपने स्वभाव में रहता है और यह देह उसके स्वभाव में रहती है। जो देहाध्यास दोनों का अनुसंधान था, एकाकार होने का, वह देहाध्यास उड़ गया, यानी यह देह, देह के कार्य में और आत्मा अपने कार्य में, उसका नाम सहजता।

दखल देनेवाला नहीं वहाँ सहजता !

प्रश्नकर्ता : अब ज्ञान के बाद तो आत्मा अपने स्वभाव में ही आ जाता है न?

दादाश्री : और पुद्गल अपने स्वभाव में आया। क्योंकि दखल देनेवाला था वह हट गया। पुद्गल सदैव कानूनन् (नियम में) ही होता है, यदि दखल देनेवाला नहीं रहा तो। यह इंजन में कोयला आदि डालकर सब कम्प्लिट कर दिया फिर यदि ड्राइवर नहीं रहा तब भी चलते रहने का उसका स्वभाव ही है। अंदर दखल देनेवाला वह बैठा हो तो ब्रेक लगाये, फिर चालू करे। पुद्गल में यदि दखलंदाजी नहीं करते तो वह शुद्ध होता ही रहे, पर यह दखलंदाजी किया करता है। पहले बखेड़ा करे, फिर दखल हो जाता है। दखलंदाजी करनेवाले कौन है? वही अज्ञान मान्यताएँ, फिर एतराज और बहाने!

देह सहज, वह इसका नाम !

प्रश्नकर्ता : देह सहज होती है, उसे देहाध्यास कहलाये क्या?

दादाश्री : सहज माने आप क्या समझें? सहज की भाषा में समझे हैं कि आपकी अपनी भाषा में? जब कट जाये और आपको असर नहीं होता तो देहाध्यास गया समझिये। देह के साथ कोई कैसी भी शरारत करे और खुद उसका स्वीकार करे तो वह

देहाध्यास है। 'मुझे क्यों किया' ऐसा रहे तो वही देहाध्यास। ज्ञानी की भाषा में देह सहज हुई मतलब देहाध्यास नहीं रहा।

जितना सहज उतनी समाधि !

प्रश्नकर्ता : देह सहज हुई कब कहलाये?

दादाश्री : जब हमारी देह को कोई कुछ भी करे और हमें राग-द्वेष नहीं हो तो पर देह सहज हुई कहलाये। यह हमारी (दादाजी की) देह सहज कहलाये। आप अनुभव करके देख लें, हमें राग-द्वेष नहीं होते हैं मतलब हमारी देह सहज है। इस पर से समझ लेना कि सहज किसे कहते हैं। सहज माने स्वाभाविक। कुदरती तौर पर स्वाभाविक। उसमें विभाविक दशा नहीं होती। 'खुद मैं हूँ' ऐसा भान नहीं।

प्रश्नकर्ता : वह तो आपने दैहिक सहजता समझाई पर खुद सहज कब होता है?

दादाश्री : खुद तो सहज हो ही रहा है, यह ज्ञान जो हमें दिया गया है न, उस ज्ञान के परिणामित होते होते सारे कर्म क्षय होते जाते हैं और सहज होता रहता है। सहज हो ही रहा है इस समय, मगर आंशिक रूप से सहज हो रहा है। इस समय सहजता के प्रति ही प्रयाण हो रहा है। देहाध्यास टूटा यानी सहज होता रहे अभी, इस समय सहज ही होता जा रहा है। जितने अंशों में सहज हुआ, उतने अंशों में समाधि उत्पन्न होती है।

यह सारी बातें हम सहज समाधि में रहकर बता रहे हैं। हम सारा दिन सहज दशा में ही होते हैं, क्योंकि इस देह के मालिक हम क्षणभर के लिए भी नहीं होते हैं, यह वाणी के मालिक नहीं और यह मन के भी मालिक नहीं हैं। शरीर का मालिकीपन छब्बीस सालों से चला गया है और छब्बीस सालों से एक सेकन्ड के लिए भी समाधि गई नहीं है। हमें थप्पड मारे तो भी हम समाधि में, हम आशीर्वाद देंगे मारनेवाले को। सहज समाधि देखना चाहो तो हमारे पास प्रत्यक्ष में देख लेना।

डिस्चार्ज का करना निपटारा !

प्रश्नकर्ता : आपने कहा कि अहंकार प्रतिष्ठा करके प्रतिष्ठित आत्मा खड़ा करता है, इसमें आपने दो बार 'आत्मा' शब्द का प्रयोग किया है। इसे फिर से समझायें।

दादाश्री : एक मूल आत्मा है और यह अहंकार जो है वह प्रतिष्ठित आत्मा है, पहले का। 'मैं करता हूँ और मेरा है', इससे नई प्रतिष्ठा खड़ी करके, यह है तो फिर से प्रतिष्ठा करता है और यही सिलसिला बना रहता है। हम है तो प्रतिष्ठा बंद करवाते हैं, मतलब चार्ज होना बंद हो जाता है। प्रतिष्ठा बंद हुई कि सब बंद हो गया। नया संसार खड़ा होना बंद हो गया।

प्रश्नकर्ता : नया संसार खड़ा होना बंद हो गया और फिर वह जो शेष रहा, उसे ही हम प्रतिष्ठित आत्मा के तौर पर मानते हैं?

दादाश्री : हाँ, और अब जो शेष है उसका निपटारा कर दें। वह निपटारे हेतु ही आया है और निपटारा करना है।

प्रश्नकर्ता : निपटारा करने में जो दखल करता है वही निश्चेतन चेतन है क्या ?

दादाश्री : उसमें दखल करता है वह निश्चेतन चेतन नहीं है, वह डिस्चार्ज अहंकार है। हाँ, मगर वह दखल करके बिगाड़ता है। बाकी, वह (शेष) तो अपने आप निपटारा होने ही आया है।

प्रश्नकर्ता : यानी प्रतिष्ठित आत्मा के तौर पर जो अलग हुआ उसमें यदि कोई किसी प्रकार से दखल नहीं करे तो वह अपने आप गलन हो जाये?

दादाश्री : हाँ, अपने आप सहज रूप से छूट जाये।

प्रश्नकर्ता : दखल देने पर उसमें बखेड़ा होता रहे?

दादावाणी

दादाश्री : बस, वह दखल पिछलेवाला अहंकार करता है, मुरदार अहंकार करता है। उस मुरदार अहंकार को बुद्धि सहलाती है। बुद्धि परेशान करती है बस, वर्ना सहज भाव से सुलझता ही जाये ऐसा है।

‘मैं’-‘मेरा’ गया कि वीतराग !

यह मिश्र चेतन में जो ‘मैंपन’ है, जो ‘मेरापन’ है, उसे निकाल लिया तो समझिये बात बन गई, मिश्र चेतन वीतराग हो गया।

प्रश्नकर्ता : ऐसा तो यह ज्ञान होने पर ही संभव है न?

दादाश्री : हाँ, ऐसा नहीं होने पर भी वह वीतराग ही है, मगर मैं-मेरापन के कारण ही राग-द्वेष होते हैं। मैं-मेरापन प्रयोग में नहीं लाते और ज्ञान नहीं रहा, तब भी वीतराग ही है।

डिस्चार्ज होता अहंकार !

यह व्यवहार आत्मा सहज हो जाये तो मूल आत्मा तो सहज ही है।

यानी हर तरह से अहंकार तो उपयोगी ही है। बिना अहंकार गाड़ी चलनेवाली नहीं है। (ज्ञान लेने के बाद) मूल अहंकार उड़ गया। मूल अहंकार, जिससे संसार खड़ा होता था, वह अहंकार उड़ गया। अब जो डिस्चार्ज हो रहा है, उस अहंकार को खाली करना है। जो अहंकार खड़ा किये बगैर होना संभव नहीं है। क्रोध-मान-माया-लोभ जो भरे पड़े हैं, वे सभी अहंकार से ही खाली हो सकते हैं।

प्रश्नकर्ता : जिस ने ज्ञान लिया हो उसके लिए ?

दादाश्री : हाँ, उसके लिए। दूसरों को तो यह काम का नहीं। बात सुनने पर कुछ काम में नहीं आनेवाला। अनुसंधान कैसे होगा? किस गाँव का टिकट और ट्रेन कहाँ जा रही हो!

प्रश्नकर्ता : डिस्चार्ज हो जाने के बाद में तो फिर अंत में सूक्ष्म अहंकार शेष रहता होगा न?

दादाश्री : सूक्ष्म अहंकार मगर वह शायद स्थूल अहंकार भी हो सकता है, पर वह लट्टू के समान यानी हमें परेशान नहीं करता।

प्रश्नकर्ता : वह तो डिस्चार्ज में, पर आपका अहंकार कैसा होता है?

दादाश्री : वह सहज हुआ होता यानी सहज होने पर वहाँ अहंकार नहीं होता।

तब होवे सहज दशा !

डिस्चार्ज अहंकार समाप्त होने के बाद, देह क्रिया करती है वह सहज क्रिया कहलाये, बिलकुल सहज। उस समय आत्मा भी सहज और देह भी सहज। दोनों जुदा और दोनों सहज भी।

यानी डिस्चार्ज अहंकार समाप्त हो जाये तब सहज आये। जैसे भूख लगने के लिए हमें कुछ करना नहीं पडता, ऐसे सहज होता है।

प्रश्नकर्ता : सहज क्रिया जो कुछ होती है, उसमें कर्मबंधन नहीं होता न कोई?

दादाश्री : होता ही नहीं। यह डिस्चार्ज में भी आपको कर्मबंधन नहीं होता है। डिस्चार्ज अहंकार में कर्म बाँधने की शक्ति नहीं है, वह कर्म छोड़ने का अहंकार है। बंधे हुआओं को छोड़ने का अहंकार है। जो बंधनग्रस्त है, उसे छोड़वाने के लिए कोई चाहिए तो सही न? यानी छोड़ने का अहंकार है वह।

देखने से अंतराय हटे !

प्रश्नकर्ता : मोक्ष प्राप्त करना सहज है। उस सहज में जो अंतराय आते हैं, उनको रोकने के लिए पुरुषार्थ है। तो आप समझाइये कि वे अंतराय कौन-कौन से हैं ?

दादाश्री : वे हमारे पूर्वभव की दखलें हैं।

दादावाणी

प्रश्नकर्ता : हाँ जी, मगर वे कौन-कौन से दखल, दादाजी ?

दादाश्री : ये सारे दखल आने पर मालूम होता जाये न ? कड़वा फल आया तो समझना किसी को कष्ट पहुँचाया था और मीठा आया तो किसी को सुख पहुँचाया था। ऐसे उनका पता चल जायेगा।

प्रश्नकर्ता : इन सारे अंतरायो का निवारण करना, टालना, उन्हें हटाना, इसमें पुरुषार्थ रहा है? कैसा?

दादाश्री : हाँ, मगर वह पुरुषार्थ यानी 'देखना' है खाली। अंतरायों को देखना है, और कुछ करना नहीं है। हटाने में तो फिर हटानेवाला चाहिए। यानी संयोगों को हटाना वह गुनाह है। जो संयोग स्वभाव से वियोगी है, उसे हटाना गुनाह है। मतलब हमें देखा करना है।

प्रश्नकर्ता : पर दादाजी, यह बात सही है कि मोक्ष प्राप्त करने के पुरुषार्थ में कुछ करना-धरना नहीं है, क्या यह बराबर है ?

दादाश्री : यह सहज वस्तु है।

प्रश्नकर्ता : मतलब वह हमारा, आत्मा का स्वभाव है ?

दादाश्री : वह तो आत्मा का स्वभाव है। जैसे यह मिसीसीपी नदी के पानी के बहाव तीन हजार मील की दूरी पर रहे समंदर को खोज निकलाता है। वह उसका स्वभाव है, सहज स्वभाव है।

प्रश्नकर्ता : उस स्वभाव में आने का पुरुषार्थ करना पड़े न?

दादाश्री : विभाविक पुरुषार्थ करने पर मिलेगा क्या? पागल मनुष्य पुरुषार्थ करे और सयाना हो जाये ऐसा संभव है क्या? याने उसे सयाने मनुष्य की शरण में जाना होगा और कहना होगा कि आप मुझ पर कृपा करें।

प्रश्नकर्ता : नहीं जी, आप कहते हैं न दादाजी, कि मोक्ष दो घंटे में मिल जाये मगर पहले ज्ञानी का अंतराय जाये तो।

दादाश्री : हाँ, मगर वह अंतराय जायेगा नहीं न! अंतराय खुद ने किये थे न!

प्रश्नकर्ता : हाँ जी, पर आपने कहा, 'केवल उसे देखने को ही कहा, ज्ञाता-द्रष्टा भाव से।'

दादाश्री : देखने से ही छुटकारा है। जो अंतराय हैं वे संयोग के रूप में आते हैं और वे स्वभाव से ही वियोगी हैं अपने आपमें। उन्हें देखने पर ही छुटकारा होगा।

प्रश्नकर्ता : पर दादाजी, उसमें तो अनेकों अवतार चाहिए उसके लिए? यानी यह सब निकाली है, ऐसा ?

दादाश्री : निकाली ही है। लोगों ने (उनकी) समझ में नहीं आने से ही यह सब गड़बड़ की है। निकाली समझ लीजिये न! यदि ग्रहणीय करें तो लिपट जाये। यदि त्याग करे तो अहंकार आ लिपटे। त्याग करनेवाला भी अहंकारी होता है और आगे त्याग का फल भुगतना पड़ता है। हमारे लोग कहते हैं न, कि 'त्यागे इसकु आगे' यदि आप देवगति का सुख भोगना चाहते हैं तो यहाँ स्त्री का त्याग कीजिये, कहते हैं। यानी हमें तो त्याग और ग्रहण, दोनों नहीं चाहिए, निपटारा चाहिए।

संयोग सारे वियोगी स्वभाव के हैं और संयोग हमारे दखल के कारण खड़े हुए हैं। यदि दखल नहीं किया होता तो संयोग खड़े नहीं हुए होते। अभी जब तक ज्ञान नहीं मिला था, वहाँ तक दखल किया ही करते थे और मन में गुमान लिए फिरते थे कि मैं भगवान का धर्म पालता हूँ।

प्रश्नकर्ता : संयोग में से सहज में गया मतलब छूट गया और फिर सहज में ही आ गया न ?

दादाश्री : सहज में रहने पर संयोग छूट जाये।

दादावाणी

खुद सहज में आ गया यानी संयोग छूट गए। संयोग में से खुद सहज में जा सके और सहज होने के बाद संयोग छूट जाये (झर जाये)।

प्रश्नकर्ता : अब संयोग भी सहज में समाविष्ट होते हैं ?

दादाश्री : नहीं, संयोग में से सहज में जाये। संयोग सहज नहीं हो सके न! सहज अलग वस्तु है और संयोग अलग वस्तु है।

सहज भाव वहाँ 'मैं'पन नहीं !

प्रश्नकर्ता : भगवान की कृपा से या शायद अपने कर्मबल को लेकर या हो सकता है कि संस्कारों के उदय के कारण हो पर आज तक प्रमाणिकता, चारित्र्यवान और बड़े संतोष के साथ रहे हैं। ढेरों लक्ष्मी और विपुल साधनों के रहते हुए भी सहज भाव से सादगी अपनाता सिखे हों, तो क्या उसमें भी 'मैं'पन का समावेश होता होगा ?

दादाश्री : नहीं, सहज भाव होगा वहाँ 'मैं' नहीं होता और जहाँ 'मैं' होगा वहाँ सहजता नहीं हो सकती। एक जगह दोनों साथ नहीं रह सकते। हमारी यह सारी क्रियाएँ सहज होती हैं। होने के बाद कुछ भी नहीं, न लेना, न देना। आज कौन-सा वार (दिन) है इसकी भी खबर नहीं। आप कहें कि यह वार हुआ तो हम 'हाँ' कर देंगे। और भूल से हमें कहलवाएँ कि आज बुधवार हुआ है, तो हम बुधवार कहेंगे। हमें कोई हर्ज नहीं है, पर सहज भाव से।

भला करने में भी अहंकार !

प्रश्नकर्ता : संतों का अहंकार तो बहुत कम हो गया होता है न ?

दादाश्री : उनमें से किसी ने तीर्थकरो की बात सही रूप से जानी नहीं है पर वे सभी सेवाभावी हैं, वह अच्छा है। यानी उनके कहे अनुसार हो सके और उसके अनुसार चले तो संपूर्ण मोक्ष तो नहीं है पर जानवरों में जाना नहीं पड़ेगा और नर्कगति में नहीं

जाना पड़ेगा, यहाँ फिर से मनुष्य होंगे। क्योंकि वह मानव धर्म है। संत है वहाँ तक अहंकार और ज्ञानी पुरुष होंगे वहाँ अहंकार नहीं होता। वे अहंकार के पक्षकार नहीं होते। संत माने भला करनेवाले, उन्हें बुरा करना रास नहीं आता। लोगों का भला कैसे हो, कैसे आगे बढ़े, धर्म कैसे कर पायें, वह सब अहंकार है। अब वह अहंकारी झुकेगा कैसे? 'मैं नहीं झुकता' यह भी एक कमजोरी है।

योगी और ज्ञानी में अंतर !

प्रश्नकर्ता : योगी पुरुष के सगे-संबंधियों का वर्णन है कि धैर्य उसका पिता है, क्षमा उसकी माता है, सत्य उसका बेटा है और शांति उसकी बहन है। दिशाएँ उसके वस्त्र हैं, भूमि उसका पलंग यानी शैया है। ऐसा सब होते हुए भी योगी को भय क्यों रहता है, ऐसा प्रश्न मेरे मन में उठता है।

दादाश्री : वह योगी है पर ज्ञानी नहीं है। ज्ञानी को ऐसा नहीं होता। ज्ञानी को सब सहज होता है। उन्हें तो ओढ़ाने पर ओढ़कर बैठेंगे और यदि स्त्री के वस्त्र पहनाओगे तो स्त्री के वस्त्र भी पहन लेंगे और यदि नंगा कर दिया तो नंगे घूमेंगे। मतलब योगी और ज्ञानी में बड़ा अंतर होता है। ज्ञानी निर्भय होते हैं।

प्रश्नकर्ता : यानी योगी में अहंकार होता है?

दादाश्री : बिना अहंकार के तो यह भूमिशयन करना आदि होता ही नहीं न! सहज वस्तु क्या है भूमि मिली तो भूमि पर, गद्दा मिला तो गद्दे पर। आप कहें कि नहीं, दादाजी आप ये तीन गद्दों पर सो जाइये तो हम ना नहीं कहेंगे। यह सापेक्ष वस्तु है, और मोक्ष में जाते जाते ऐसे स्टेशनों से गुज़रना होता है। इसलिये कुछ निकाल बाहर करने जैसा नहीं है। मूल स्टेशन को जान गये मतलब यह निकाल बाहर करने जैसा नहीं है। यह गलत नहीं है पर इससे आगे तो बहुत दूर जाना है अभी। यह कुछ अंतिम स्टेशन नहीं है। यदि कोई सूरत को मुंबई सेन्ट्रल मानकर वहाँ खड़े रहकर मुंबई सेन्ट्रल के बारे में बतायें ऐसी यह बात है।

दादावाणी

ज्ञानी के ज्ञान से छुटकारा !

प्रश्नकर्ता : योगीओं को सारे चक्र सिद्ध हो जायें, फिर उनका चित्त बाहर भटकने जायेगा क्या?

दादाश्री : चित्त का भटकना कब रुकेगा? यदि ज्ञानी से ज्ञान पाकर, ज्ञानी की आज्ञा का पालन करें, तो चित्त का भटकना रुकेगा।

प्रश्नकर्ता : इसका अर्थ ऐसा होता है कि जहाँ तक ज्ञानी पुरुष के पास नहीं आता, वहाँ तक चित्तवृत्ति कभी लौटकर ही नहीं आती?

दादाश्री : 'ज्ञानी' नहीं मिलते वहाँ तक कोई गुजारा ही नहीं है। तब तक यह सब मेहनत बेकार है। जहाँ तक ज्ञानी पुरुष नहीं मिलते, वहाँ तक क्या भूखे बैठे रहना? राशन के गेहूँ मिले तो वह खाने पड़ें। जो कोई साधु महाराज मिला उसके पास बैठ जाना। कोई भूखे थोड़े ही बैठे रहें। बाकी, ज्ञानी मिलने पर ही छुटकारा है, ओर कहीं भी जाओगे पर (संसार से) छुटने का रास्ता नहीं है।

प्रश्नकर्ता : पतंजलि ने योग की व्याख्या में बताया है कि, 'योग माने चित्तवृत्ति का निरोध' और आपका कहना है कि, 'अपने आप लौट आती है।' उसमें प्रयत्न है और इसमें प्रयत्न नहीं है।

दादाश्री : हाँ, उसमें निरोध का प्रयत्न करना पड़े और यह तो सहज आती रहे, लौट आये। पहले चित्तवृत्तियाँ जो बाहर भटका करती थीं, वे सभी लौट आयें। बाहर जायेगी ज़रूर मगर जाकर वापस लौट आयेगी। नहीं लौट आती क्या? हमें हाँकने जाना नहीं पड़ता। और पहले तो हाँकने जाने पर भी वापस नहीं लौटती थीं।

वेदना में स्थिर वह अहंकारी !

प्रश्नकर्ता : मगर कहा जाता है कि गजसुकुमार के सिर पर मोक्ष की पगड़ी बाँधी गई थी तो क्या उस समय गजसुकुमार आत्मरमणता में थे, इसलिये उसे तब पगड़ी का पता नहीं चला था?

दादाश्री : पगड़ी का पता नहीं चला होता तो मोक्ष नहीं होता। यानी पगड़ी का पता रहा, सिर जल रहा है उसे देखा। उसमें जो समता धारण की कि मैं शुद्धात्मा हूँ, यह शरीर अलग है यह देखा, मगर उनकी जो समता रही वही मोक्ष। भीतर जलन हो, सब मालूम रहे। पता नहीं चलना वह तो मूर्च्छा है।

कुछ लोग ऐसे होते हैं जो (अहंकार से) स्थिर बैठकर जल मरते हैं। उसे देखकर लोग मुझे कहते हैं कि फलाँ जलकर मर गया पर ज़रा भी हिला नहीं। मैं ने कहा, 'अहंकारी है।' ज्ञानी पुरुष का हाथ यदि जल रहा हो तो रोयेंगे-करेंगे (स्वाभाविक प्रतिभाव देंगे)। यदि रोते नहीं तो ज्ञानी ही नहीं होते। उनका सहज भाव रहता है। यह तो अहंकार का कंकड। कंकड को कहीं भी, कैसे भी फेंकेंगे तो उस पर कोई असर नहीं होगा। वैसे ये लोग किसी को पता चलने नहीं देते। ऐसा सब (मोक्ष में) फोकट का नहीं चलता, ऐसा इलाज नहीं चलता। यह दादाजी अब आये हैं। हाँ, आजतक चलता था पर अब जैसा है वैसा ही बताना है। आज तक तो गलत पैसे बनाये हैं, वो ही चल रहे हैं, पर अब वे नहीं चलनेवाले।

वेदना को जाना करे वही सहज !

प्रश्नकर्ता : यानी पिछले कर्म पूरे नहीं होते, वहाँ तक उसका वेदन करते रहे और उसे जाना करे, वेदन करते रहे और उसे जाना करे?

दादाश्री : हाँ, वेदन किया करे और जाना करे।

प्रश्नकर्ता : तो क्या शुद्धात्मा दशा में रहने पर वेदना का असर नहीं रहता क्या?

दादाश्री : हाँ, वेदन करना पड़े, क्योंकि उसका असर इतना प्रबल होता है कि 'मैं शुद्धात्मा हूँ' जानते हुए भी असर का वेदन होता है। असर मंद रहेगा तो वेदन नहीं होगा, यों ही पाँच-सात मच्छरों ने एक साथ काट खाया हो तो वेदन तो होगा ही न ?

प्रश्नकर्ता : पर दादाजी, ऐसे (किसी को)

दादावाणी

शारीरिक कष्ट सहन करने की नौबत आये और वैसे ही ज्ञानी पुरुष को भी शारीरिक वेदना की नौबत आये तो वे भी चीखें-चिल्लाएंगे क्या?

दादाश्री : ज्ञानी पुरुष चीखते-चिल्लाते नहीं, उनका शरीर चीखता-चिल्लाता है और यदि शरीर चीखता-चिल्लाता नहीं तो वे ज्ञानी नहीं हो सकते। दूसरे लोग जान जायें इसलिये अज्ञानी अहंकार से वेदना को दबा देते हैं।

प्रश्नकर्ता : अपने अहंकार से दबाते हैं?

दादाश्री : अहंकार से सब बंद हो जाये। अहंकार तो बहुत काम करे। अहंकार चला गया वह ज्ञानी। इनसे पूछिये तो सही कि इंजेक्शन लेते समय हमें क्या होता है? ठंडा करना पड़ता है। अहंकार चला गया न, इसलिये। वर्ना जब मेरा अहंकार था, तब दियासलाई जलाकर उसके ऊपर अंगूठा धर रखता था और मैं कहता, 'यहाँ दियासलाई धर' यानी दो दियासलाईयाँ सुलगती रही तब तक रहने दिया था। अहंकार क्या नहीं करता? अहंकार सब कुछ कर सके और यह सहजता नहीं कर सकती।

शरीर स्थिर रखे अहंकारी !

प्रश्नकर्ता : अगर रोये नहीं तो वह अहंकारी?

दादाश्री : अहंकारी कहलाये, उनकी देह सहज भाव में नहीं होती।

प्रश्नकर्ता : वह अहंकारी क्यों कहलाये, दादाजी?

दादाश्री : अहंकार होने पर ही स्थिर हो सके। देह को स्थिर करनेवाला अहंकारी गिना जाये। वे सभी अहंकार से स्थिरता करते हैं। ज्ञान से स्थिर करनेवाले लोग तो और ही होते हैं।

प्रश्नकर्ता : दादाजी, योग में तो सब ऐसे ही करते हैं न?

दादाश्री : वे तो अहंकार से ही करते हैं।

एकबार भगवान महावीर के कानों में नरकट घुसेड़ दिया था। जो उनसे नहीं निकल पाया, इसलिये दूसरों ने निकाला तब निकल पाया। उस समय भगवान आह-आह करते थे और आँखों से अश्रु बह निकले थे। इसे देखकर लोगों ने कहा कि ये भगवान काहे के? जो अहंकारी होता है न, वह अश्रु निकलने नहीं देता। सहज स्वभाव रहा तो अश्रु निकलेगा, 'बाप रे! बाप रे!' ऐसे भी चिल्लाये। अहंकारी होगा वह तो सब कुछ करे। अहंकारी होगा वह आँखों से अश्रु नहीं बहने देगा और चीखेगा-चिल्लायेगा भी नहीं। और भगवान महावीर तो नरकट निकालते ही 'आह, आह' करके चीखे चिल्लाये तब सच्चे पुरुष की पहचान हुई कि नहीं, सच्चे भगवान तो यही हैं। सहज हैं, साहजिक हैं। अहंकारी कभी साहजिकता में नहीं रह सकते।

प्रश्नकर्ता : उसे दुःख होता हो तो भी दुःख के मनोभाव होने नहीं दे, विशेष दिखावा नहीं करे।

दादाश्री : वह अहंकार है। अहंकार क्या नहीं करता? अहंकार बहुत शक्तिमान है। प्रकट नहीं होने दे कि मुझे दुःखा था। भगवान महावीर को ऐसा नहीं था। सहज स्वभाव था। उनके मन में ऐसा नहीं कि अगर मैं रो दूँगा तो लोगों को हमारा ज्ञान गलत लगेगा। लोग चाहे कुछ भी मानें, वे सहजता में होंगे।

इसलिये कृपालुदेव ने कहा कि, ज्ञानी पुरुष को सन्निपात हो जाये और लोगों को इतनी-इतनी गालियाँ सुना रहे हों तो उसकी ओर मत देखना, उनके बाह्य लक्षणों को मत देखना। वह संयोगाधीन है, कहतें हैं। तू असंयोगी को देखना। वही के वही हैं वे।

प्रश्नकर्ता : बहुत गहरी बात... महावीर को नरकट घुसेड़ा और अगर वे चीखे-चिल्लाये नहीं तो वह अहंकार है।

दादाश्री : हाँ।

प्रश्नकर्ता : यह तो बड़ी सूक्ष्म, मार्मिक बात है।

दादावाणी

दादाश्री : शरीर का विचलित होना, किसी के जलाने पर हिल जाना, यह सब देह का सहज स्वभाव है और आत्मा परपरिणाम में नहीं, वह सहज आत्मा। सहज आत्मा माने स्वपरिणाम।

दोनों सहज तो कार्य परिपूर्ण !

निर्विकल्प योग उसका नाम सहज योग कहलाये। आत्मा तो सहज ही है। यह देह सहज हो गई तो सारा कार्य परिपूर्ण हो गया। आत्मा सहज ही है। आत्मा असहज होता ही नहीं। मगर यह देह असहज होने से आत्मा को स्पंदन हुआ करते हैं। देह सहज हो जाये यानी हो गया।

दृष्टि किसकी?

दृष्टि तो अहंकार को है, आत्मा को दृष्टि नहीं होती। आत्मा को तो सहज स्वभाव से भीतर दिखता रहे। अपने अंदर ही सब दिखाई दे।

प्रश्नकर्ता : तो फिर यह आत्मा को जाननेवाला कौन है? आत्मज्ञान होता है, वह किसे होता है?

दादाश्री : वह अहंकार को दृष्टि मिलती है ऐसी। पहले मिथ्या दृष्टि थी, उसकी तुलना में 'इसमें' अधिक सुख मिलता है, इसलिये फिर वह अहंकार धीरे-धीरे 'इसमें' पिघलता जाता है। अहंकार शुद्ध हुआ कि वह शुद्धात्मा के साथ पिघल जाता है, बस। जैसे शक्कर की पुतली होती है उसे तेल में डालें तो पिघलती नहीं पर पानी में डालने पर पिघल जायेगी, इसके जैसा है। यानी शुद्धात्मा की दृष्टि हुई कि सब पिघलने लगे, वहाँ तक यह अहंकार है।

उसका महान उपकार !

मूल वस्तु पाई, फिर अब अहंकार का रस खींच लेना है। राह चलते कोई कहे कि, 'अरे! आप कमअक्ल हैं, सीधे चलिये।' उस समय जो अहंकार खड़ा हो वह अहंकार सहज ही टूट जाये, खींच जाये।

रीस होगी, पर उसमें रिसाना कैसा? हमें अब रीस करने जैसा रहा ही नहीं। अहंकार का जो रस है, उसे खींच लेना है।

अपमान किसी को अच्छा नहीं लगता, पर हम कहते हैं कि वह तो बहुत हेल्पिंग है। मान-अपमान तो अहंकार का कड़वा-मीठा रस है। अपमान करे वह तो आपका कड़वा रस खींचने आया कहलाये। 'आप कमअक्ल हैं' कहा मतलब वह रस सामनेवाले ने खींच लिया। जितना रस खींचा गया उतना अहंकार टूटा और वह भी हमारे बिना मेहनत के ओर किसी ने खींच दिया। अहंकार तो रसवाला है। जब अनजाने में कोई निकालेगा तो जलन होगी, इसलिये जानकर अहंकार को कटने देना। सामनेवाला सहज रूप से रस खींच निकाल देता हो, उसके समान और क्या है? सामनेवाले ने कितनी बड़ी हेल्प की कहलाये।

अनित्य रूप का भी अहंकार !

अब यह रूप रहनेवाला नहीं है। यह रूप को कुरूप होते देर नहीं लगती। घड़ी में 'बड़ी माता' (एक प्रकार का रोग) निकल आई तो कैसा निखरेगा रूप फिर? 'बड़ी माता' निकलने के बाद रूप रहेगा क्या? चाहे कोई कैसा भी रूपवान क्यों नहीं हो? हमारे हाथ में कुछ सत्ता हैं? यानी रूप का अहंकार नहीं करना चाहिए। 'मेरे जैसा कोई रूपवान नहीं है' वह अभिमान हुआ। यानी 'मैं गोरा हूँ' ऐसा बोलना अहंकार नहीं है। लोगों को तो अहंकार का पता ही नहीं है। अभिमानी का तो तुरंत पता चल जाये।

प्रश्नकर्ता : गुप फोटो जब निकालनी हो तब अभिमान तुरंत ही नज़र आ जायेगा।

दादाश्री : हाँ, अरे! फ़ोटोग्राफर तक समझ जायेगा कि यह अभिमान में आया है। पर वही फ़ोटोग्राफर हमें देखते ही तुरंत 'क्लिक' कर देगा। वह जान ले कि ये बिलकुल अभिमान रहित दिखते हैं। और अभिमानी तो उस समय बड़ा चौकस हो जायेगा।

दादावाणी

अरे भैया! चौकस क्यों हो जाता है ? जब कि वहाँ हमारी साहजिकता होती है।

‘मैं जानता नहीं’ वह सात्त्विक अहम् !

प्रश्नकर्ता : सात्त्विक अहम् होने पर प्राप्ति होगी कि नहीं होगी?

दादाश्री : सात्त्विक अहम् रहना मुश्किल है। उसकी व्याख्या करना मुश्किल है। सात्त्विक अहम् कैसा होता है कि ‘मैं कुछ भी नहीं जानता हूँ।’

प्रश्नकर्ता : जो सहज भाव से ही होगा?

दादाश्री : नहीं, ऐसा अहम् कि, ‘मैं कुछ भी नहीं जानता हूँ।’ इसलिये ये सारे लोग मिथ्या प्रयास करते हैं न! सारी दुनिया मिथ्या प्रयास में लगी हुई है। एक अक्षर भी मिले ऐसा नहीं है। यह सत्य मिलना मुश्किल है। जो सत्य इन लोगों को मिला है वह विनाशी सत्य है।

अज्ञान दशा के अहंकार !

हम अहंकार नहीं पर अभिमान में रहते थे। अरे! तुनकमिजाज भी हो गये थे। और कुछ लोग तो ऐसा भी कहते कि ये बड़ा शेखीबाज है। क्योंकि हमें ज्ञान नहीं था पर फिर भी पूर्व के संस्कार सब ऐसे उच्च कोटि के आ मिले थे, इसलिये मुझे ऐसा रहता था कि, ‘हमारे पास कुछ है।’ इतना मालूम जरूर था और उसके कारण ज़रा शेखी रहा करती थी।

यानी अहंकार कहाँ चाहिए, अभिमान कहाँ होना चाहिए, वह सब कहाँ होना चाहिए, यह सभी मेरे लक्ष्य में है। अब आज अहंकारी पुरुष एक भी नहीं मिलेगा, विकृत तो हुआ ही होगा, अभिमान तक तो पहुँचा ही होता है।

अहंकारी पुरुष होना वह तो साहजिक कहलाये। वह सहज अहंकार है और इस काल में ऐसे अहंकारी तो होते ही नहीं न! लायें कहाँ से अहंकारी? आज तो अभिमानी होंगे। अहंकार तो क्या है? कि ‘मैं

चंदुभाई हूँ’ यही अहंकार है, मगर वह तो साहजिक वस्तु है। उसमें उसका गुनाह नहीं है। और अभिमान क्या है? वह जो कारखाना है वह हमारा है। यह दवाखाना भी हमारा है। यानी ऐसा सब बार-बार दिखाते फिरे तो समझना कि यह कौन बोल रहा है? उसका अभिमान बोल रहा है।

ज्ञानी को उन्मत्तता नहीं !

फिर दूसरा कौन-सा गुण?

प्रश्नकर्ता : उन्मत्तता नहीं है।

दादाश्री : हाँ, उन्मत्तता माने क्या? आपकी समझ में आता है? मैं आपको आपकी भाषा में बता देता हूँ।

ये लोग अहंकार कैसा करते हैं? यहाँ से जाता हो तब सीधा, ‘स्ट्रेट फोरवर्ड’ होकर जाता हो, साहजिक तौर पर पद्धति अनुसार चलता हो और लौटते समय हम देखें तो चाल बदल गई होती है, हमें लगे कि इसमें कोई परिवर्तन आ गया है, ‘फेस’ (चेहरा) बदला हुआ दिखाई दे। लौटते समय रोब से आ रहा हो। इस पर से हम अंदाजा लगा सके कि इस पर कोई ‘इफेक्ट’ हुआ है।

इसलिये ज़रा तलाश करने हम उसे कहें कि, ‘आइये आइये, ज़रा चाय पीकर जाना’ तलाश करने चाय पिलाते हैं, उसके रोब को लेकर नहीं। तब वह तो यही समझे कि मेरा रोब देखकर चाय पिलाते हैं। चाय-पानी के बाद हम पूछें कि, ‘किस ओर जाकर आये?’ तब कहे, ‘उससे पाँच हजार माँगता था न, वह लेकर आया।’

जेब में पाँच हजार आये कि इतना असर हो गया। उन्मत्त हो जाये। उसे रोग लगा है, यह उन्मत्तता का। यानी ‘टाइट’ हो गया है, वर्ना बासी बैंगन की तरह यों झूक जाता।

बोलिये, अब वे पाँच हजार यदि मनुष्य को

दादावाणी

'टाइट' करते हैं, मनुष्य उन्मत्त हो जाता है तो हमारे, ज्ञानी पुरुष के वश में तो भगवान पूरे के पूरे आ गये हैं। बोलिये, हमारा कितना 'टाइट' होता होगा? पर फिर भी उन्मत्तता नाममात्र नहीं है। अजूबा है न, यह भी! (पाँच हजार यदि इतना टाइट करते हैं तो भगवान, तीन लोक के नाथ, जिनके वश हो, वे (ज्ञानी पुरुष) कैसे 'टाइट' होंगे? पर नहीं, खरी लघुता ही वही होती है। हम तो छोटे बालक के समान होते हैं।

अहंकार उपयोगी !

प्रश्नकर्ता : अहंकार हमेशा अवरोधकर्ता है या उपयोगी भी होगा?

दादाश्री : बिना अहंकार के तो इस दुनिया में यह बात भी नहीं लिखी जायें। एक चिट्ठी लिखनी हो न, वह भी अहंकार की गैरहाजिरी में नहीं लिखी जायेगी। अहंकार के दो प्रकार हैं; एक डिस्चार्ज होता (मुरदार) अहंकार, जो लट्टू के समान है और दूसरा चार्ज होता (जीवित) अहंकार, जो शूरवीर की तरह होता है, लड़े-झगड़े सब कुछ करे। बेचारे पहलेवाले (अहंकार) के हाथ में तो कुछ भी नहीं, जैसे लट्टू घूमे वैसे घूमा करे। यानी बिना अहंकार के तो दुनिया में कुछ होता ही नहीं है। यह चिट्ठी तक नहीं लिखी जाये न? पर वह डिस्चार्ज होता अहंकार है। आपको परेशान नहीं करता। बिना अहंकार के तो कार्य होता ही नहीं। हमें बोलना तो पड़ेगा ही कि मुझे संडास जाना है, मैं संडास जाकर आया। अहंकार के हस्ताक्षर होने पर ही कार्य होता है, वर्ना कार्य नहीं होता।

प्रश्नकर्ता : यानी आम तौर पर एक जगह पर जो पूरा अहंकार बरतता हो, उसकी तुलना में हमें अधिक बरतता हो, कम बरतता हो, और आपका बिलकुल कम हो गया हो?

दादाश्री : नहीं, आपको है तो हर पाँच मिनट पर थोड़ा ब्रेकडाउन होता है। फिर बढ़ता जाये। सहजता ज्यों-ज्यों बढ़ती जाये, त्यों-त्यों पहलेवाला

अहंकार कम होता जाये। जब से ज्ञान दिया तब से सहजता बढ़ती जायेगी और पहलेवाला अहंकार कम होता जायेगा। और कुल मिलाकर अंतिम स्टेशन कौन सा? तब कहे, आत्मा सहज स्थिति में और देह भी सहज स्थिति में, वही अंतिम स्टेशन। दोनों अपने-अपने सहज स्वभाव में।

प्रश्नकर्ता : उस सहजता की कल्पना करना मुश्किल है।

दादाश्री : हाँ, वह कल्पना, कल्पना नहीं होती न! वह कल्पना में आनेवाला नहीं। कल्पना का व्याप, उसका सरकमफरन्स, एरिया बहुत छोटा होता है, सहजता का एरिया तो बहुत विशाल होता है!

एक्झेक्ट सहजता, अज्ञानदशा में भी !

शरीर तो इन गायों-भैसों को भी है न ?

प्रश्नकर्ता : यह चलते हैं वह भी अहंकार से, बैठते हैं वह भी अहंकार से, खाते हैं वह भी अहंकार से, सब अहंकार से ही है।

दादाश्री : सब कुछ अहंकार का ही, सारा हंगामा ही अहंकार का है।

प्रश्नकर्ता : ये गायें-भैंसे खाती हैं वह भी अहंकार से?

दादाश्री : हाँ, वह अहंकार ही होता है मतलब बिना अहंकार के चलता ही नहीं और उनका सब कुछ लिमिटेशनवाला होता है और उनका अहंकार कैसा होता है? चार्ज करनेवाला नहीं, डिस्चार्ज होता है।

प्रश्नकर्ता : हाँ, डिस्चार्ज अहंकार।

दादाश्री : यानी मुरदार अहंकार, नया कार्य नहीं करता, पुराने कार्य का निपटारा करे।

प्रश्नकर्ता : अब ज्ञान ले लिया हो, उसके लिए ही ऐसी बात रहती है न?

दादाश्री : ऐसा ही रहा फिर। गायों-भैंसों को

दादावाणी

अहंकार का दखल नहीं होता। वे जिस रसोई में खड़ी होती है वहीं उनका युरीनल, बाथरूम, जो कुछ भी है, सब वहीं होता है उनको कोई भेद नहीं होता, जिस समय जैसा उदय आये और हमें तो बुद्धि जोर लगाती है।

प्रश्नकर्ता : बुद्धि जागृत रखती है उस तरह से?

दादाश्री : हाँ, यहाँ विवेक उत्पन्न होता है कि ऐसा नहीं करते, वहाँ विवेक नहीं होता।

प्रश्नकर्ता : विवेक, बुद्धिजन्य ही होता है कि साहजिक हो सकता है?

दादाश्री : हाँ, बुद्धि से। बिना बुद्धि के नहीं होता। बुद्धि के प्रकाश से विवेक खड़ा हुआ है।

प्रश्नकर्ता : बुद्धि के प्रकाश से और विनय?

दादाश्री : विनय भी बुद्धि के प्रकाश से ही।

प्रश्नकर्ता : दोनों बुद्धि के प्रकाश के कारण ही है?

दादाश्री : हाँ, और परम विनय ज्ञान के प्रकाश से है।

आत्मा के उपयोग !

इस देह के साथ आत्मा है इसलिये आत्मा का उपयोग होना चाहिए। मनुष्य चार प्रकार से (इसे) उपयोग में ला रहे हैं। ये जानवर आत्मा का उपयोग नहीं करते। उपयोग केवल अहंकारियों को ही है। जानवर तो सहजभाव ही है। इन गायों-भैसों को सहज भाव से ही रहता है कि यह खाया जाये और यह नहीं खाया जाये।

आत्मा के चार उपयोग हैं : अशुद्ध उपयोग, अशुभ उपयोग, शुभ उपयोग और शुद्ध उपयोग।

प्रश्नकर्ता : आत्मा के उपयोग माने 'शुद्धात्मा' के या 'प्रतिष्ठित आत्मा' के?

दादाश्री : प्रथम तीन उपयोग 'प्रतिष्ठित आत्मा' के हैं और शुद्ध उपयोग 'शुद्धात्मा' का और वह भी वास्तव में 'प्रज्ञा' का है।

इन उपयोगों में मूल आत्मा खुद, किसी भी तरह कर्ता नहीं है।

अंतर, शुभ और शुद्ध व्यवहार में !

प्रश्नकर्ता : शुद्ध व्यवहार और शुभ व्यवहार में क्या अंतर है?

दादाश्री : शुभ व्यवहार तो अज्ञानी और ज्ञानी दोनों ही कर सकते हैं। क्योंकि ज्ञानी को शुभ व्यवहार करना होता नहीं है, उनसे हो जाता है अपने आप। और अज्ञानी करता है, उसे अहंकार रहा न, इसलिये शुभ व्यवहार करता है। यानी आप उनसे कहें कि, 'आप हमारा नुकसान करते हैं, हमें आपके साथ काम नहीं करना है।' तो वह क्या कहेगा? 'नुकसान हुआ उसे भूल जाइये, पर अब नये सिरे से हमारे लिए अच्छा काम कीजिये न?' यानी हमने अशुभ किया पर वह शुभ करता है। जहाँ चिढ़ना चाहिए वहाँ चिढ़ता नहीं है। उलटे हमें रोक लेता है कि आज तक जो हुआ उसे भूल जाइये और नये सिरे से मानों कुछ भी नहीं हुआ हो, कुछ गुनाह नहीं किया हो, ऐसे शुरू कीजिये। ऐसे भूला देने पर ही गाड़ी आगे चलेगी, वर्ना गाड़ी डीरेल हो (पटरी से उतर) जायेगी। डीरेलमेन्ट हुआ को देखा है न आपने? मतलब शुभ व्यवहार ज्ञानी और अज्ञानी दोनों कर सकते हैं। ज्ञानी को सहजभाव से होता है, अज्ञानी को करना पड़ता है।

व्यवहार जागृतिपूर्वक हो, वह आत्मा का उपयोग कहलाये। फिर शुभाशुभ व्यवहार भी जागृतिपूर्वक हो तो भी आत्मा का उपयोग कहलायें और शुद्ध व्यवहार हो वह भी जागृति है। शुद्ध व्यवहार आत्मा के अनुभव सहित का व्यवहार है जब कि शुभ व्यवहार आत्मा के अनुभव बगैर का व्यवहार है। मगर आत्मा का स्वीकार करने के बाद ही जागृति आती है।

दादावाणी

ज्ञानी, अंतःकरण से जुदा !

प्रश्नकर्ता : हमारे में जो मन है, वैसा ही मन दादाजी के पास है? हमारी बुद्धि, विचार वह भी दादाजी के जैसे है?

दादाश्री : केवल आत्मा ही समान सभी का, बाकी सब कुछ अलग-अलग होता है सभी का। दुसरा, बैठक हमारी और आपकी अलग-अलग, यानी हिसाब सारा अलग-अलग।

इस समय तो मन अच्छा है न? ज्ञानी पुरुष की हाजिरी में मन बहुत चंगा रहे। क्या कारण है उसका? यदि उनकी उपस्थिति में हमारा मन इतना चंगा रहता है, तो उनका मन कितना सुंदर होगा? उनके मन-बुद्धि-चित्त-अहंकार भी होते हैं, पर सुंदर होते हैं। ऐसे पगले नहीं होते। सुंदर यानी वह अहंकार भी हमें मनोहर लगे। मनोहर यानी मन का हरण करनेवाला लगे। अब जितनी शक्ति एक मनुष्य में है, उतनी दूसरे मनुष्य में होगी कि नहीं? इन्डिया में बर्थ (जन्म) है, यहाँ का जन्मा हुआ है, तो शक्ति सभी में होगी न? उसे डेवलप करने की ज़रूरत है।

ज्ञानी का अंतःकरण कैसे कार्य करता होगा? 'खुद' अगर हट जाये तो 'अंतःकरण' से 'आत्मा' अलग ही है। आत्मा अलग हो गया तो सांसारिक कार्य अंतःकरण से चलते रहे। अलग करने के बाद ज्ञानी का अंतःकरण खुद ही स्वाभाविक रूप से कार्य किया करे। क्योंकि दखलंदाजी बंद हो गई है, इसलिये अंतःकरण का कार्य सुचारु रूप से और ज़रूरत के अनुसार ही होता रहे और लोगों के लिए उपयोगी सिद्ध हो। आत्मा अलग होने पर सांसारिक कार्य अंतःकरण से चला करे, उसका नाम ही सहज। मन-बुद्धि-चित्त और अहंकार हाजिर ही हाजिर रहें, उससे संपूर्ण जागृति रहें, वीतराग ही रहें।

प्रकार अपनापा के !

प्रश्नकर्ता : यह अपनापा कि बात बहुत बड़ी

कहलाये, एक रक्षणवाला और दूसरा 'अटैकवाला' (आक्रमणवाला)।

दादाश्री : हाँ, मतलब 'अटैकवाला' जाये तो फिर रक्षणवाला आयेगा। तब अपनापा सही (रूप में) कहलाये। वर्ना वहाँ तक उसे हिंसकभाव ही कहा जायेगा। 'अटैकवाला' अपनापा छूटेगा, उसके बाद वह रक्षणवाला अपनापा छूटने की शुरुआत होती है।

प्रश्नकर्ता : 'अटैकवाला' अपनापा उसे ज़रा विस्तार से समझाइये।

दादाश्री : किसी को दुःख पहुँचे ऐसा अपनापा किस काम का? अपनापा, अपनी प्रकृति के रक्षणार्थ हो तो अलग बात थी, उसे अपनापा कहा जाये। मगर इससे विपरीत रहा तो वह तो अपनापा तक नहीं कहलाये।

लोगों का अपनापा तो अभी कैसा है? प्रकृति का रक्षण करने की बात तो है ही, पर उलटे आक्रमण भी करता हैं, सामनेवाले पर प्रहार भी करता हैं। यानी सब से पहले बड़ा काम, यह अपनापा निकालने का है। प्रकृति का रक्षण करना वह अपनापा, हमारे महात्माओं ऐसा करते होंगे सही? इसलिये सहज नहीं होते। ज़रा-सा अपमान होने को हो, उससे पहले रक्षण करना शुरू कर दे, ज़रा-सा किसी ने कुछ विरुद्ध किया कि रक्षण के लिए तत्पर हो जाये। यह सब सहज नहीं होने देते।

उदय में तन्मयता, वह उलटी सहजता !

प्रश्नकर्ता : ज्ञान के बाद आनेवाली साहजिकता कैसी होती है, इसके बारे में बताइये न?

दादाश्री : उदय आया हो उतना ही करेंगे, अपनापा नहीं रखते। पर वह साहजिकता अपनापा सहित होती है। पतंग चढ़ाने गया वह साहजिक। दादाजी ने मना किया, उसे नहीं जाना चाहिए, फिर भी गया...

प्रश्नकर्ता : वह तो दादाजी की आज्ञा के विरुद्ध गया कहलाये न?

दादाश्री : विरुद्ध और फिर साहजिक कहलाये ऊपर से। इसका परिणाम भैंस बनाये, ऐसी साहजिकता। जैसे भैंस हो, वो कैसे बर्ते ऐसी साहजिकता।

बुद्धि रहित वहाँ साहजिक !

देह दाँत दिखाता हो और उसे वे देखे, आत्मा जाने, तो दोनों सहज कहलाये। दाँत दिखाना गैरकानूनी नहीं है, यदि गैरकानूनी होता तो लोग आपति जताते न? पर उससे अलग रहे, उसे ऐसा नहीं होता हो कि यह मैं करता हूँ।

प्रश्नकर्ता : देह करती है, मैं नहीं करता।

दादाश्री : देह करती है। पर वहाँ सहज के आगे बुरा या गलत नहीं होता है। देखनेवाले को बुरा या गलत नहीं होता, करनेवाले को होता है। जहाँ तक बुद्धि है वहाँ तक बुरा है। देखनेवाला हुआ कि ज्ञानी हुआ और ज्ञानी को बुरा-गलत नहीं होता है। इसलिये कषाय सब बिदाई लेते हैं।

दादाजी की अनोखी साहजिकता !

प्रश्नकर्ता : ज्ञानी के पास पड़े रहिये, ऐसा जो कहा है, उसमें पड़े रहिये यानी यह सब देखा करें, यही न?

दादाश्री : हाँ, उनकी साहजिकता सारा दिन देखने को मिले। कैसी सहजता! कैसी निर्मल सहजता है! कितने निर्मल भाव हैं! बिना अहंकार की दशा कैसी होती है? बुद्धि बगैर की दशा कैसी होती है? यह सब देखने को मिले। इन दो दशाओं के तो दर्शन तक नहीं होते न कहीं? बिना अहंकार की दशा और बगैर बुद्धि की दशा, देखने को नहीं मिलती। जहाँ कहीं देखे वहाँ बुद्धिमानों का झमेला। यों ही बात करते हों तो नाक यों चढ़ी हुई होती है। कुछ सहज नहीं

होता। फोटो निकालते समय नाक चढ़ गई हो। फोटो खींचनेवाला हमें देखे न तो उसे फोटो नहीं खींचनी हो, तो भी हमारी फोटो खींच लेंगे, उसे लगे यह फोटो खींचने जैसी है। वे सहजता की खोज में रहते हैं। नाक चढ़ी हुई हो तो फोटो सहज नहीं निकलती।

यानी कहीं भीड़ में किसी के साथ जायें, वहाँ पर भी हमारा मुँह तंग नहीं दिखाई दे, तो वे समझ जायें कि धेर इझ समथिंग (यहाँ पर कुछ है)। लोगों के पास दृष्टि है और उन्हें देखना आता है। खुद को भले ही ऐसा नहीं आता हो, अपना मुँह वीतराग रखना नहीं आता हो पर सामनेवाले का मुँह वीतराग है, यह देखना बहुत अच्छी तरह से आता है, निहायत बारीकी से। चढ़ा हुआ चेहरा अच्छा नहीं दिखता, नहीं? फोटो देखने पर भी पता चल जाये कि यह मुँह चढ़ा हुआ है। इसलिये ये फोटोग्राफर फोटो खींचे तब सामनेवाला असहज हो जाये तो उसकी फोटो खींचना उसे अच्छा नहीं लगता। वे सहजता देखते हैं। और हमारे पर सदा प्रसन्न! जैसी भी मुद्रा में हों वे खुश। क्योंकि हम सहज होते हैं। वे बहुत खुश हो जाते हैं। वे जिस सहजता की खोज में होते हैं, वह यहाँ सहज रूप से मिलती है और दूसरों को तो कहना पड़े कि 'जरा सीधे बैठना'। ज्यादातर फोटो खींचवाते समय हमारे लोग असहज हो जाते हैं और वे तस्वीरें सुंदर नहीं आती। सहज तस्वीरें दर्शनीय होती हैं। अच्छी तस्वीर कौन-सी दिखती है? जो सहज होती है, उनमें अहंकार नहीं फैला होता।

आप हमारी फोटो लेना चाहे और कहें कि आप हाथ जोड़िये, तो हम हाथ जोड़ेंगे, बस और क्या सरोकार? क्योंकि हमें मन में ऐसा नहीं होता कि ये हमारी फोटो निकाल रहे हैं अगर ऐसा मन में हो तो विकृत हो जायें। हम सहज होते हैं। बाहर चाहे कितने भी फोटो खींचनेवाले आयें तो वे समझ जायें कि दादाजी सहजता में ही हैं, देखते ही क्लिक कर देंगे।

जय सच्चिदानंद

दादावाणी

त्रिमंदिर, अडालज में होनेवाले विशेष कार्यक्रम

- २१ अक्टूबर (शनि) - दिपावली के अवसर पर भक्ति - रात्रि ८-३० से १०-३०
२३ अक्टूबर (सोम) - नूतन वर्ष के अवसर पर सुबह ९ से १२ - पूजन-दर्शन-भक्ति
२७ अक्टूबर (शुक्र) - ज्ञानविधि दोपहर ३-३० से ७
१६ से २५ वर्ष की अपरिणीत भाईयों के लिये संस्कार सिंचन शिविर ता. २५-२६-२७ अक्टूबर २००६
१६ से २५ वर्ष की अपरिणीत बहनों के लिये संस्कार सिंचन शिविर ता. २७ अक्टूबर दोपहर से २९ अक्टूबर

पूज्य दीपकभाई देसाई के सान्निध्य में सत्संग कार्यक्रम

जूनागढ

१६-१७-१८ नवम्बर, शाम ८ से १० सत्संग और १९ नवम्बर (रवि), शाम ३ से ७ - ज्ञानविधि
स्थल : ए.जी. स्कूल ग्राउन्ड, म्युनिसीपल बिल्डींग के सामने, तालाब दरवाजा. फोन : ९४२६९ १५१७५

राजकोट

२१ नवम्बर, शाम ७-३० से १० सत्संग और २२ नवम्बर (बुध), शाम ७ से १० - ज्ञानविधि
स्थल : बालभवन, रेसकोर्स, राजकोट. फोन : ९९२४३ ४३४५९

जामनगर

२४-२५-२७ नवम्बर, शाम ६ से ८-३० सत्संग और २६ नवम्बर (रवि), शाम ५ से ८ ज्ञानविधि
स्थल : नेशनल हाईस्कूल, आर्यसमाज रोड, खंभालिया नाका बाहर, जामनगर. फोन : ९४२६२ ३३४९८

कोलकता

७-८-१० दिसम्बर, शाम ६ से ८-३० सत्संग और ९ दिसम्बर (शनि), शाम ५-३० से ८-३० ज्ञानविधि
स्थल : विद्यामंदिर, १, मोइरा स्ट्रीट, मीठो पार्क के पास, कोलकता. फोन : ९३३०१ ३३८८५

पूज्य नीरू माँ के टी.वी. कार्यक्रम

- भारत + 'दूरदर्शन' (नेशनल) सुबह ८-३० से ९ 'नई दृष्टि, नई राह' (सोम से शुक्र)
तमिलनाडु में उसी समय देखिए, तमिल भाषा में...
+ 'दूरदर्शन' डीडी-१ हररोज दोपहर ३-३० से ४ (गुजराती में) (सिर्फ गुजरात में)
+ 'Zee आल्फा गुजराती' सुबह ७ से ८ 'वात्सल्यधारा' (गुजराती में)
+ 'आस्था इन्टरनेशनल' हररोज दोपहर १२ से १२-३० (गुजराती में)
+ सोनी टीवी पर सुबह ७ से ७-३०, (हिन्दी) (सोम से शुक्र) - समग्र विश्व में (भारत के अलावा)
+ 'आस्था इन्टरनेशनल' पर सुबह ७-३० से ८, (सोम से शुक्र) - समग्र विश्व में (भारत के अलावा)
U.K. : + Zee Gujarati (Channel 839), Everyday 6-30 AM to 7-30 AM (In Gujarati)
U.S.A. : + 'TV Asia' Everyday 7 to 7-30 AM EST (In Gujarati)
+ Zee Gujarati, Everyday 8 to 9 AM EST (In Gujarati)
+ 'TV 39 (NJ)' Mon-Fri 6 to 7 PM & Sat 6 PM to 6-30 PM (In Gujarati)
Canada: + 'ATN' Every Wed-Thu 8.30 to 9.00 AM EST

पूज्य दीपकभाई को देखिये टी.वी. चैनल्स पर...

डीडी-११ पर हररोज रात्रि ९ से ९-३० (गुजराती में)

'आस्था इन्टरनेशनल' पर रात्रि १० से १०-३०, (सोम से शुक्र) - समग्र विश्व में

दादावाणी

सभी महात्माओं को मुंबई के महात्माओं की ओर से हार्दिक निमंत्रण

अक्रम विज्ञानी परम पूजनीय दादा भगवान का ९९वाँ जन्मजयंति महोत्सव

अक्रम विज्ञानी परम पूजनीय श्री दादा भगवान तथा आत्मज्ञानी पूजनीय डॉ. नीरूमाँ की सूक्ष्म हाजिरी
और आत्मज्ञानी पूजनीय श्री दीपकभाई देसाई के सान्निध्य में...

आध्यात्मिक ज्ञानशिविर : २ से ५ नवम्बर २००६, सुबह १० से १२-३०, शाम ६ से ८-३०

जन्मजयंति समारोह : ४ नवम्बर (शनिवार) सुबह में - पूजन-दर्शन-भक्ति तथा सत्संग

ज्ञानविधि : ५ नवम्बर (रविवार), शाम ५ से ८-३०

स्थल : कोरा केन्द्र ग्राउन्ड, मेकडोनाल्ड के सामने, ओफ एस.वी.रोड, इस्ट-वेस्ट फ्लायओवर के पास,
बोरीवली (वेस्ट), मुंबई-९२, दूरभाष : (०२२) २४१३७६१६, २४११३८७५

बाहरगाँव से आनेवाले महात्मा-मुमुक्षुओंको व्यवस्था हेतु विशेष सूचनाएँ :-

१) बाहरगाँव से आनेवाले महात्मा से निवेदन है कि वे कृपया अपने आगमन की अग्रिम सूचना निम्न पते पर करना न भूलें। आनेवाले भाईयों-बहनों की संख्या अलग-अलग लिखें। ठहरने की व्यवस्था आप खुद करनेवाले हैं कि व्यवस्थापकों द्वारा की जाये, यह सूचित करने का अवश्य कष्ट करें। जिन्होंने अग्रिम सूचना दी होगी, उनके लिये ही प्रबंध किया जायेगा।

पत्रव्यवहार का पता : श्री मेगेशभाई छेडा, बी-२०५, रुपल एपार्टमेन्ट, ९८, दादा साहब फालके रोड,
दादर (इस्ट) मुंबई-४०००१४. **फोन :** ०२२-२४११३८७५ (निवास) **फेक्स :** ०२२-२४१५०८३४

२) शिविर में भाई-बहनों के अलग ठहरने की व्यवस्था की जायेगी, इसलिये सामान अलग से लाना न भूलें।

३) ओढने-बिछाने की चदरें, एयर पीलो, ताला-चाबी, आवश्यक दवाइयाँ अपने साथ अवश्य लायें।

४) किसी प्रकार का अनावश्यक कीमती सामान-अलंकार कृपया न लायें।

मार्गसूचक नक्शा :

⇒ ट्रेन से आनेवाले यात्री स्थल पर पहुँचने बोरीवली रेलवे स्टेशन पर उतरें।

⇒ बोरीवली रेलवे स्टेशन से कोरा केन्द्र ग्राउन्ड १.२ कि.मी. की दूरी पर है।

⇒ रेलवे स्टेशन से कोरा केन्द्र ग्राउन्ड आनेवाली सिटी बस नं. : २०२, २०३, २०६, २१०, २१५, ३०९, ४४९, ४८८ और ७०७ के द्वारा पहुँचा जा सकता है।

⇒ रिकशा में मिनिमम भाड़े में स्थल पर पहुँचा जा सकता है।

कोरा
वेण्ड्र

बोरीवली (वेस्ट)

मेकडोनाल्ड रेस्टोरन्ट

एस.वी. रोड

बोरीवली
फ्लाय ओवर

बोरीवली
रेल्वे स्टेशन

द
न
पा
डा
रो
ड

ठाकुर कोम्पलेक्स
कांदीवली

H.P
पेट्रोल पंप

टाटा स्पेशीयल स्टील

वेस्टर्न एक्सप्रेस हाईवे

कांदीवली

बोरीवली (ईस्ट)

दहिसर